सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : tameer1963@gmail.com
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

सच्चा राही
A/c. No. 10863759642 (Current A/c.)
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.
कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 0522–2740406 अथवा ईमेलः tameer1963@gmail.com पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मार्च, 2019 वर्ष 18 अंक 1

अट्ठारह में क़दम है रखा

सच्चा राही सत्य मार्ग पर चल रहा निरंतर है
सत्तरह वर्षों से यह सेवा कर रहा निरंतर है
अट्ठारह में क़दम है रखा रब की यह तौफ़ीक़ है
दीन की सेवा करता रहेगा रब की जो तौफ़ीक़ है
संरक्षक है नदवा इस का रब का यह वरदान है
काम की बातें है यह लिखता रब का यह वरदान है
परामर्श लिख कर प्रिय पाठक अपना वह सहयोग दें
ग़लती पा कर सूचित कर के अपना वह सहयोग दें
सच्चा राही दीन की बातें लिखा करे यह दुआ करें
भूल चूक जो हुई हो हम से प्रिय पाठक क्षमा करें

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	08
सच्चा राही अट्ठारहवें वर्ष में	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	10
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	13
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी	18
एक रोशन दिमाग़ था, न रहा	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी	21
सहा–बए–किराम की मिसाली	सय्यिद मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0	23
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	27
एलाने मिलकियत	इदारा	29
हमारी सफलता नबी सल्ल0	मौलाना सय्यिद हम्ज़ा हसनी नदवी	30
परीक्षा की तैयारी	शमीम इक़बाल खाँ	32
हज़रत अली रज़ि0	हज़रत मौ0 मु0 अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0	36
लम्बी टांगों वाला पक्षी		40
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुरआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-माइदाः

अनुवाद–

ऐ ईमान वालो! निःसंदेह शराब, जुआ, मूर्ति और पांसे गन्दे शैतान के काम हैं तो उनसे बचते रहो ताकि तुम सफल हो जाओ[1](90) शैतान तो चाहता है कि शराब और जुए से तुम में दुश्मनी और नफ़रत डाल दे और अल्लाह की याद से और नमाज़ से तुम्हें रोक दे तो अब तो तुम बाज़ आ जाओगे?[2](91) और अल्लाह के आदेशों को मानों और पैग़म्बर के आदेशों को मानों और बचते रहो फिर अगर तुमने मुंह मोड़ा तो जान लो कि हमारे पैग़म्बर का काम तो साफ़–साफ़ पहुंचा देना है(92) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उन पर कोई पाप नहीं जो वे पहले खा चुके जब वे डरे और ईमान ले आये और उन्होंने अच्छे काम किये फिर वे डरे और विश्वास किया फिर वे डरे और उन्होंने उत्कृष्ट काम किये और अल्लाह उत्कृष्ट काम करने वालों को पसन्द करता है[3](93) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तुम्हें ज़रूर आजमाएगा ऐसे शिकार से जिस तक तुम्हारे हाथ या तुम्हारी नज़रें पहुंच जाती हैं ताकि अल्लाह जान ले कि कौन बिन देखे उस से डरता है तो जिसने उसके बाद भी ज़ियादती की तो उसके लिए दुखद अज़ाब (दण्ड) है[4](94) ऐ ईमान वालो! जब तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार मत मारो फिर तुम में जो जान बूझ कर उस को मार दे तो जो जानवर उसने मारा उसी तरह का (जानवर) उसका जुर्माना है, जिसका फ़ैसला तुममें दो इन्साफ़ करने वाले करेंगे, इस तौर पर कि वह कुर्बानी का जानवर कअ़बा तक पहुंचाया जाए या ग़रीबों को खाना खिला कर कफ़्फ़ारा अदा किया जाए या उसके बराबर रोज़े रखे जाएं[5] ताकि वह अपने किए की सज़ा पा लें, जो कुछ हो चुका वह अल्लाह ने माफ़ कर दिया और जो दोबारा यह हरकत करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा और अल्लाह जबर्दस्त (प्रभुत्वशाली) है बदला लेने वाला है[6](95) समन्दर का शिकार और उसका खाना तुम्हारे लिए हलाल किया गया ताकि वह तुम्हारे और मुसाफ़िरों (यात्रियों) के लिए फ़ायदे का ज़रिया बने और जब तक तुम एहराम की हालत में रहो तुम पर खुश्की का शिकार

हराम किया गया, अल्लाह से डरते रहो जिसके पास तुम्हें एकत्र किया जाएगा(96) अल्लाह ने कअबे को जो बड़ी इज़्ज़त वाला घर है इंसानों के बाक़ी रहने का आधार बनाया है और[7] इज़्ज़त वाला महीना और हरम की कुरबानी का जानवर और वह जानवर जिनके गलों में पट्टा डाला जाए (यह सब चीज़ें अल्लाह ने सम्मानित बनायी हैं) ताकि तुम समझ लो कि जो कुछ भी आसमानों में है और जो कुछ भी ज़मीन में है अल्लाह उनको खूब जानता है और अल्लाह हर चीज़ की पूरी जानकारी रखने वाला है[8](97) जान लो बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला भी है और बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है(98) पैग़म्बर के ज़िम्मे तो पहुंचा देना है और तुम जो भी ज़ाहिर करते हो और जो भी छिपाते हो अल्लाह उसको जानता है(99) कह दीजिए कि गन्दा और पाक बराबर नहीं हो सकते चाहे गंदे की अधिकता आपको अचम्भे में डाल दे तो ऐ होश वालो! अल्लाह से डरते रहो शायद तुम सफल हो जाओ[3](100) ऐ ईमान वालो! ऐसी चीज़ों के बारे में मत सवाल करो कि अगर वे तुम्हारे लिए खोल दी जाएं तो तुम्हें बुरी लगें और अगर तुम इस समय उनके बारे में पूछोगे जिस समय कुर्आन उतर रहा है तो वह तुम्हारे लिए खोल दी जाएंगी और अल्लाह ने उनको माफ़ कर रखा है और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला हलीम (सहनशील) है[10](101) तुम से पहले भी एक क़ौम ने उनके बारे में सवाल किया था फिर वे उसका इनकार करने लगे[11](102) बहीरा, साइबा, वसीला और हामी में से अल्लाह ने कुछ भी नहीं बनाया लेकिन काफ़िर अल्लाह पर झूठ बांधते हैं और उनमें अधिकतर नासमझ हैं[12](103)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. शराब और जुवे के बारे में पहले भी कहा जा चुका था ''व इस्मुहुमा अकबरु मिन नफ़्इहिमा'' (उनका गुनाह उनके फ़ायदे से अधिक है) फिर आयत ''ला तक् र बुस्सलात व अंतुम सुकारा'' (नशे की हालत में नमाज़ के निकट मत जाओ) उतरी लेकिन हराम होने का स्पष्ट आदेश नहीं आया था, हज़रत उमर रज़ि0 पूरा कहते थे ''अल्ला हुम्मा बइ इन लना बयानन् शफिमन'' अंततः यह आयतें उतरीं जिसमें मूर्ति पूजा की तरह इस गंदगी से भी बचने की हिदायत भी ''फहल अंतुम मुन्तहून'' सुनते ही हज़रत उमर पुकार उठे ''इन्तहइना इन्तहइना'' लोगों ने शराब के मटके तोड़ डाले, मधुशालाएं बर्बाद कर दिए गय मदीने की नालियों में शराब बह रही थी।

2. आम तौर से शराब और जुवा झगड़ों का कारण बनते हैं फिर आदमी को किसी चीज़ का होश नहीं रहता।

3. संशय पैदा हुआ कि जो लोग शराब पी कर शहीद हो गए

या पहले उनका निधन हो गया उनका क्या होगा उसका जवाब है कि जब तक वे (संयम) के विभिन्न दर्जों पर आसीन रहे और हराम होने से पहले उसने शराब पी भी ली तो उनकी पकड़ न होगी वह तो अल्लाह का प्रिय है।

4. हुदैबिया घटना के अवसर पर यह आदेश आया शिकार इतना अधिक मात्रा में और निकट था कि हाथ से पकड़ सकते थे मगर वे अल्लाह के बन्दे जमे रहे।

5. मसला यह है कि अगर कोई जानवर मार दिया तो उस जैसा ही कोई जानवर ऊँट, बैल, बकरी में से ले कर उसे हरम तक पहुंचा कर ज़िबह करे और खुद न खाए या उस जानवर के बराबर सदक़ा कर दे और अगर इतनी हैसियत न हो तो जानवर की क़ीमत लगा कर दो सेर गेहूं के हिसाब जितने दिन बनते हों उतने दिन रोज़े रखे।

6. जान बूझ कर भी पहली गलती अल्लाह माफ़ कर देगा लेकिन अगर कोई दोबारा जानबूझ कर ग़लती करे तो अल्लाह उसको सख़्त सज़ा देगा और अगर भूल चूक कर शिकार कर लिया तो कफ़्फ़ारा वही है हां पकड़ नहीं होगी।

7. जब तक वह घर स्थापित है इंसान बाक़ी है और जिस दिन वह घर न रहेगा क़यामत आ जाएगी।

8. यानि कअ़बे को इंसानों के बाक़ी रहने का मदार बनाने में जिन दीनी व दुन्यावी संधियों की रिआयत की गयी और सोच के विपरीत जो भविष्यवाणी की गयी यह इस बात का प्रमाण है कि आसमान व ज़मीन में कोई चीज़ अल्लाह के ज्ञान की परिधि से बाहर नहीं हो सकती है।

9. नापाक और गंदी चीज़ें चाहे कितनी ज़ियादा और मनमोहक नज़र आएं लेकिन उनका प्रयोग विनाशकारी ही है।

10. हलाल और हराम को बता दिया गया अब अकारण खोज करना अच्छा नहीं अगर अनावश्यक सवाल किए गए जब कि पवित्र कुर्आन उतर रहा है तो हो सकता है कोई ऐसा कठोर कानून आ जाए जिस पर अमल कठिन हो जैसे पिछली क़ौमों के साथ हो चुका है।

11. शायद यहूदियों की ओर इशारा है जो दीन के हुक्मों में ऐसी ही बाल की खाल निकाला करते थे और जब उस कारण से पाबन्दी लगायी जाती थी तो अमल करने से इनकार कर बैठते थे।

12. यह वह जानवर हैं जिनको वे मूर्तियों के नाम से छोड़ देते थे और उनसे लाभ उठाना हराम समझते थे। बहीरा उस जानवर को कहते थे जिसके कान चीर कर उसका दूध बुतों के नाम पर चढ़ा दिया जाता था। साइबा उस जानवर को कहते थे जो बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था और उससे किसी भी तरह का फ़ायदा उठाना हराम समझा जाता था। वसीला उस ऊँटनी को कहते थे जो लगातार मादा बच्चे जनती थी उसको भी बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था, और हामी वह नर जानवर होता था जो विशेष संख्या में संबंध स्थापित कर चुका हो। इसको भी बुतों के नाम पर छोड़ दिया जाता था।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

लगातार रोज़े रखने की मुमानियतः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 व हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लगातार रोज़े रखने से मना फरमाया है।

(बुखारी मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलसल रोज़े रखने से मना फरमाया है, लोगों ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप तो बराबर रोज़े रखते हैं, आपने फरमाया मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूं मुझे खिलाया पिलाया जाता है।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

कब्र पर बैठने की मुमानियतः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कोई अंगारे पर बैठे तो यहां तक कि उसका कपड़ा जल कर बदन में आग लग जाये यह उस से बेहतर है कि कब्र पर बैठे। (मुस्लिम)

पक्की कब्र बनाने की मुमानियतः–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पक्की कब्र बनाने से, उस पर बैठने और उस पर इमारत बनाने से मना फरमाया है।

(बुखारी मुस्लिम)

गुलाम के भागने पर वईद (चेतावनी):–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो गुलाम अपने आक़ा से भाग जाये तो वह इस्लाम की पनाह से निकल गया। (मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो गुलाम अपने आका से भाग जाये उसकी नमाज़ कबूल न होगी। (मुस्लिम) एक रिवायत में है कि वह काफ़िर हो गया।

सजाओं के बारे में सिफारिश करने की सख़्त मनाहीः–

अनुवादः बदकार औरत और बदकार मर्द इन दोनों में से हर एक को सौ कोड़े मारो और इन दोनों पर अल्लाह के हुक्म की तामील में तरस न खाओ, अगर तुम अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो।

(सूरः नूरः रू. 1)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि मख़जूम की एक औरत ने चोरी की, इज़्ज़त दार औरत थी, लोगों को बहुत भारी गुज़रा कि उसकी आबरूरेज़ी हो, आपस में मश्विरा करने लगे कि कौन उसके बारे में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

से रिफारिश करे, तै पाया कि उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बहुत महबूब हैं वही सिफारिश करें, उनके अलावा कोई इसकी हिम्मत नहीं कर सकता, चुनांचि लोगों के कहने से उसामा रज़ि0 ने सिफारिश की, हुजूर सल्ल0 ने फरमाया तुम अल्लाह की ओर से मुतअय्यन सज़ाओं के बारे में सिफारिश करते हो, फिर आप ख़ुत्बे के लिए खड़े हो गये और फरमाया अगली उम्मतें इसी लिए हलाक़ हुईं कि जब उनमें कोई शरीफ चोरी करता तो उसको बे सजा दिये छोड़ देते और गरीब चोरी करता तो उसको सजा देते थे, मुझे क़सम है अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी फातिमा रज़ि0 भी चोरी करे तो मैं उसके हाथ काटूंगा।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि सिफारिश सुन कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहर–ए–मुबारक का रंग बदल गया और फरमाया तुम अल्लाह की हुदूद में सिफारिश करते हो, हज़रत उसामा रज़ि0 ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप मेरे लिए बख्शिश चाहिए, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश से उसका हाथ काटा गया।

रास्ते में गंदगी करने की मुमानियतः–

अनुवादः जो लोग मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को बेकसूर तकलीफ़ पहुंचाते हैं वह सरीह गुनाह और बोहतान का बोझ उठाते हैं।

(सूरः अहजाब–8)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दो लानती काम से बचो, लोगों ने अर्ज किया वह कौन से काम हैं, फरमाया जो रास्ते में और साये के नीचे पेशाब पाखाना करता है। (मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ठहरे हुए पानी में पेशाब करने से मना फरमाया है।

(मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

भावार्थ हदीस

फरमाया नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे अस्हाब के बारे में अल्लाह से डरो, जिस ने उन से महब्बत की उस ने मेरी महब्बत की वजह से उन से महब्बत की और जिस ने उनसे बुग़ज़ रखा उसने मुझ से बुग़ज रखने के सबब बुग़ज रखा।

सच्चा राही अट्ठारहवें वर्ष में

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसकी कृपा से ''सच्चा राही'' ने अपनी सेवाओं के सत्तरह वर्ष पूरे कर लिए और इस अंक पर अट्ठारहवें वर्ष में प्रवेश किया। ख़ुदा का शुक्र है कि सच्चा राही सत्तरह वर्षों तक हर माह की पहली तारीख़ को पोस्ट होता रहा है। अल्लाह तआला से दुआ है कि यह भविष्य में भी इसी तरह अपितु इससे अच्छे ढंग से अपनी सेवाएं जारी रखे।

नदवतुल उलमा से पांच पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं, दो अरबी भाषा में, एक उर्दू भाषा में और एक अंग्रेज़ी भाषा में तथा यह ''सच्चा राही'' हिन्दी भाषा में।

अरबी भाषा में मासिक पत्रिका "अल–बअ़सुल इस्लामी" तथा दूसरी पत्रिका अर्ध मासिक ''अर–राइद''। यह दोनों पत्रिकाएं अपने देश के अरबी जानने वाले मुस्लिमों में विशेषकर आलिमों में बहुत मक़्बूल हैं, यह दोनों पत्रिकाएं पर्याप्त मात्रा में अरब देशों में भी जाती हैं और वहां बड़ी रुचि से पढ़ी जाती हैं, इन दोनों पत्रिकाओं को अरब देशों में विशेष स्थान प्राप्त है।

अंग्रेज़ी पत्रिका "फ्रेगरेन्स ऑफ ईस्ट'' **(FRAGRANCE OF EAST)** यद्यपि उसकी प्रकाशन संख्या बहुत कम है परन्तु अंग्रेज़ी जानने वाले मुस्लिमों में मक़्बूल है।

उर्दू पत्रिका अर्धमासिक ''तामीरे ह़यात'' मुस्लिम समाज में बड़ी ही मक़्बूलियत रखता है, इसकी प्रकाशन संख्या सात हज़ार से अधिक है, अल्लाह तआला इसकी ख़िदमात ज़ारी रखे, और इसकी मक़्बूलियत में बढ़ोत्तरी करे इस पत्रिका में आम तौर से नदवतुल उलमा के बुज़ुर्गों के लेख होते हैं इसीलिए इसको मुस्लिम समाज में बड़ी मक़्बूलियत हासिल है।

अब से सत्तरह वर्ष पहले नदवतुल उलमा के ज़िम्मेदारों ने जब महसूस किया कि मुस्लिम समाज के पढ़े लिखे युवकों में उर्दू लिखने पढ़ने वाले नाम मात्र के रह गए हैं। जिन युवकों ने मदरसों में शिक्षा पाई है वही उर्दू लिखते पढ़ते हैं, उनकी संख्या तमाम युवकों के मुक़ाबले में पांच प्रतिशत भी नहीं है, 95 प्रतिशत मुस्लिम युवक हिन्दी लिखते पढ़ते हैं यद्यपि उनकी मातृ भाषा तथा घर के बोल चाल की भाषा उर्दू है परन्तु उनके लिखने पढ़ने की भाषा हिन्दी है, अतः नदवे के बुज़ुर्गों ने ज़रूरत महसूस की, कि नदवतुल उलमा की ओर से एक हिन्दी पत्रिका प्रकाशित हो। इस प्रकार ''सच्चा राही'' अस्तित्व में आया, अल्लाह का शुक्र है कि यह उस वक़्त से अब तक हिन्दी भाषा में अपनी सेवाएं जारी रखे हुए है, इनशाअल्लाह भविष्य में भी इसकी सेवाएं जारी रहेंगी।

आरम्भ में मुझे तीन सहयोगी दिये गये थे। जनाब मास्टर हसन अंसारी (एम.ए.एल.टी.) और जनाब हबीबुल्लाह आज़मी (एम.ए.) यह दोनों सज्जन सरकारी नौकरियों से अवकाश प्राप्त बड़े ज्ञानी और अनुभवी थे जब तक यह रहे इनके अच्छे लेख सच्चा राही में प्रकाशित होते रहे यह दोनों अल्लाह को प्यारे हो गये, अल्लाह उनकी बख्शिश फरमाये। शुरु में मौलाना मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी का भी सहयोग रहा फिर वह अपने इल्मी कामों में मश्गूल हो गये अल्लाह उनकी मदद करे। और अब जनाब मौलाना सय्यिद मुहम्मद गुफ़रान नदवी साहिब का सहयोग प्राप्त है।

सच्चा राही में स्थाई रूप से जिन शीर्षकों पर लिखा जाता है वह हैं:– कुर्आन की शिक्षा, प्यारे नबी की प्यारी बातें, आपके प्रश्नों के उत्तर और उर्दू सीखिए।

इनके अतिरिक्त इस्लामिक इतिहास, इस्लामिक विश्वास, अख़्लाक़ियात (नैतिकता सम्बन्धित बातें) तथा इनके अतिरिक्त लाभदायक विषयों पर उलमा के लेख प्रकाशित होते हैं यही वजह है कि सच्चा राही हमारे पाठकों में स्वीकृत प्राप्त किये हुए है। मेरा अपना अनुभव है कि सच्चा राही जिस हिन्दी जानने वाले मुस्लिम युवक को प्रस्तुत किया गया उसने इसको पसंद किया और इसकी प्रशंसा की इसके बावजूद इसका प्रकाशन 2000 से आगे न बढ़ सका अगर हमारे प्रिय पाठक प्रयास करें तो इसका प्रकाशन बहुत बढ़ सकता है।

यह बात हम मानते हैं कि ''सच्चा राही'' में जो लेख प्रकाशित होते हैं वह लेखकों के क़लम से बराहेरास्त (प्रत्यक्षतः) नहीं होते हैं। इसका कारण यह है कि हम नदवतुल उलमा के बुजुर्गों विशेषकर हज़रत मौलाना अली मियां साहब रह0, हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (नाज़िम नदवतुल उलमा), हज़रत मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आ़ज़मी नदवी (मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा) आदि के लेख छापना चाहते हैं और यह हज़रात हिन्दी में नहीं लिखते, यह हज़रात उर्दू में लिखते हैं, इनके लेख उर्दू पत्रिका ''तामीरे ह़यात'' में छपते हैं, हम उनको तामीरे हयात से ले कर कभी हिन्दी में अनुवाद कर के तो कभी उर्दू ही को हिन्दी लिपि में लिख कर 'सच्चा राही' में छापते हैं।

हम इसका प्रबन्ध करते हैं कि दीनी विषयों पर सच्चा राही में जो कुछ लिखा जाए वह आलिमों ही के क़लम से हो, ग़ैर आलिम लेखकों से हम बराबर अनुरोध करते आए हैं कि वह ग़ैर दीनी विषयों पर लाभदायक लेख लिखें जैसे भूगोल, विज्ञान, मछली पालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन आदि। इसी प्रकार विज्ञान के इस्कॉलर मछलियों के प्रकार,

मुर्गियों के प्रकार, मधुमक्खियों के प्रकार आदि पर प्रकाश डालें।

यह सही है कि हम लेखकों को कोई प्रतिफल देने में असमर्थ हैं, हम उनके लेख उनके धन्यवाद के साथ ही प्रकाशित कर सकेंगे, इनशाअल्लाह उनके प्रयासों का प्रतिफल पाठकों की दुआवों से अल्लाह तआला प्रदान करेंगे।

सच्चा राही के विषयों को यद्यपि मैं ऐडिट करता हूं परन्तु मौलाना मुहम्मद गुफ़रान नदवी (सहायक सम्पादक) का उसमें पूरा सहयोग और परामर्श रहता है, कम्पोज़ किये हुए मैटर की प्रूफ़ रीडिंग जमाल अहमद नदवी (कारकुन दावत व इरशाद विभाग) करते हैं। वह बाज़ मज़ामीन विशेष कर ''प्यारे नबी की प्यारी बातें'' का उर्दू से हिन्दी में अनुवाद करते हैं, जो मजामीन उर्दू से हिन्दी में अनुवाद किये जाते हैं या उर्दू हिन्दी लिपि में लिखे जाते हैं उसमें जनाब हुसैन अहमद (कारकुन सच्चा राही दफ़्तर) का बड़ा सहयोग रहता है, पर्चे की समय पर छपाई तथा पोस्टिंग का काम जनाब नियाज़ अहमद नदवी साहब (इंचार्ज दफ़्तर सहाफत व नश्रियात) बड़ी पाबन्दी से अन्जाम देते हैं। इनशाअल्लाह मैं न रहूंगा तो ये हज़रात पर्चे को भली भांति चलाते रहेंगे।

प्रिय पाठको! मुझे यक़ीन है कि आप सब नमाज़ के पाबन्द होंगे, साथ ही आप से अनुरोध है कि जो भाई नमाज़ में कोताही कर रहे हों उनको समझा बुझा कर नमाज़ का पाबन्द बनायें, इसी प्रकार रमज़ान के रोज़ों में जो भाई कोताही करें उनको समझा बुझा कर उनसे रोज़े रखवाएं, इसी प्रकार जिस पर ज़कात फर्ज़ हो या हज़ फर्ज हो और वह कोताही कर रहे हों तो उनको समझा बुझा कर उनसे फर्जों की अदायगी करवाएं, आपस में मेल व मुहब्बत क़ाइम करने की कोशिश करें, हमारा समाज मिश्रित है, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, शिया, सुन्नी सब एक साथ रहते हैं, चाहिए कि सब अपने–अपने धर्म पर जमे रहें और दूसरों को सहन करें, लड़ाई झगड़े से दूर रहें, आपस में सहयोग रहे, सहानुभूति रहे, मेल मिलाप रहे।

प्रिय पाठको! हम सब सुन्नी हैं, अल्लाह के नबी से प्रेम हमारे ईमान का भाग है, उनका अनुकरण हमारे लिए अनिवार्य है उनके सभी साथियों (सहाबा) का आदर सम्मान हमारे लिए अनिवार्य है, हम खुलफाए राशिदीन हज़रत अबू बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत हसन रज़ियल्लहु अन्हुम से प्रेम व महब्बत रखते हैं सहाबा इंसान थे, वह मासूम न थे, उनके आपस में झगड़े भी हुए हैं, शरई ज़रूरत के बिना उनके आपसी झगड़ों का ज़िक्र करने को हराम समझते हैं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हू के कातिलों को जालिम और जहन्नमी मानते हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हू

शेष पृष्ठ....31 पर

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

रिसालत (दूतता)

दीन व शरीअत के बारे में नबियों की ग़ैरत व अडिगताः–

नबी उन अक़ाएद (विश्वासों), दावत व संदेश और शरीअत के बारे में जिन को वह लेकर आते हैं बड़े ग़ैरतमंद और प्रवर सूझ–बूझ वाले होते हैं। वह किसी हालत में भी (चाहे उनकी कामयाबी और लोकप्रियता की ही मसलहत का तकाज़ा क्यों न हो) इसके लिए तैयार नहीं होते कि अपनी दावत व शरीअत (आवाहन व कानून) में कोई संशोधन या परिवर्तन सहन कर लें। उनके यहां जो दिल में हो उसके विपरीत ज़ाहिर करने और अपने सोच को बदल देने की गुंजाइश नहीं होती। कुर्आन अपने अन्तिम सन्देष्टा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित कर के कहता हैः–

अनुवादः– *अतः आपको जिस काम का हुक्म दिया गया है उसे साफ़ सुना दीजिए, और मुश्रिकों की परवाह न कीजिए।*

(सूरः अल्हिज्र 64)

अनुवादः– *ऐ रसूल! आपके रब की ओर से आप पर जो कुछ उतारा गया है, उसे पहुंचा दीजिए, और अगर ऐसा न किया तो आपने उसका पैग़ाम नहीं पहुंचाया और अल्लाह आपको लोगों की बुराइयों से बचाए रखेगा।*

(सूरः अल–माईदाः 67)

अनुवादः– *ये लोग चाहते हैं कि आप नर्म पड़ जाएं, तो ये भी नर्म हो जाएं।*

(सूरः अल–क़लम 6)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तौहीद की सोच बल्कि इस्लाम के तमाम बुन्यादी अक़ायद यहां तक कि दीन के अरकान व फरायज़ (स्तम्भ व कर्तव्य– कलमा, नमाज़, रोज़ा आदि) के बारे में भी लचकदार और सुलह वाला रवैया न था जो राजनेताओं का (जो स्वतः अपने को यथार्थवादी और व्यावहारिक इन्सान समझते हैं) हर ज़माने में विशिष्टता रही है। शहर तायफ़ की विजय के बाद, कुरैश के बाद, अरब के दूसरे ज़बरदत कबीला सक़ीफ़ का शिष्ट मण्डल इस्लाम कुबूल करने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित होता है और प्रार्थना करता है कि लात नामी मूर्ति को (जिसकी वजह से तायफ़ को मक्का के बाद केन्द्रत्व और पवित्रता हासिल थी) तीन साल तक अपने हाल पर रहने दिया

जाये और दूसरी मूर्तियों की तरह इसके साथ व्यवहार न किया जाये। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम साफ इन्कार फरमा देते हैं। शिष्ट मण्डल के लोग दो साल, फिर एक साल की मुहलत मांगते हैं, आप बराबर इनकार करते हैं, यहां तक कि वह इस पर उतर आते हैं कि हमारे ताएफ़ वापस जाने के बाद सिर्फ एक महीने की मोहलत दे दी जाए लेकिन आप उनकी अंतिम प्रार्थना स्वीकार करने के बजाय अबू सुफियान पुत्र हर्ब (जिनकी तायफ़ में रिश्तेदारी थी) और सक़ीफ़ क़बीला ही के एक व्यक्ति मुगीरः पुत्र शोअ़बा को आदेश देते हैं कि वह जायें और लात को ढा दें। शिष्टमण्डल के लोग एक प्रर्थना यह भी करते हैं कि उन्हें नमाज़ से माफ़ रखा जाये। आप कहते हैं कि उस दीन में कोई भलाई नहीं जिसमें नमाज़ नहीं। इस वार्ता के बाद वह अपने वतन वापस लौटते हैं और उनके साथ अबूसुफियान और मुगीरः भी जाते हैं और लात को ढा देते हैं और पूरे सक़ीफ़ कबीला में इस्लाम फैल जाता है, यहां तक कि पूरा तायफ मुसलमान हो जाता है।

(ज़ादुलमआद खण्ड एक पेज 458–459)

नबियों की विशेषता यह भी है कि वह अपने प्रचार प्रसार में और समझाने बुझाने में वही शैली अपनाते हैं जो उनके आवाहन की आत्मा और नबूवत के स्वभाव से मेल खाती है। वह खुल कर और पूरी स्पष्टता के साथ आखिरत की दावत देते हैं, जन्नत और उसकी नेमतों और लज़्ज़तों का शौक दिलाते हैं। दोज़ख़ और उसके भयावह दृश्यों से डराते हैं। मानो वह निगाहों के सामने हैं। वह बौद्धिक दलीलों व तर्क के बजाय ग़ैब पर ईमान की मांग करते हैं।

उनका ज़माना भी भौतिक दर्शनशास्त्रों और दृष्टिकोणों से (जो उनके युग की सतह और हालात के अनुरूप होते हैं) एक दम खाली नहीं होता, उस युग में भी कुछ (वर्गों) की विशेष शब्दावली होती है, वह उनसे अनभिज्ञ नहीं होते, वह यह भी खूब समझते हैं कि यह दर्शनशास्त्र और पारिभाषिक शब्द सिक्का रायजुलवक्त (व्यवहृत सिक्के) हैं और इनका इस दौर में चलन है, लेकिन लोगों को करीब लाने और अपनी तरफ़ दावत देने के लिए वह इनसे काम नहीं लेते। वह अल्लाह पर उसकी सिफ़ात (गुण) व अफ़आल (कर्म) के साथ फरिश्तों पर, भाग्य पर (अच्छी हो या बुरी), मौत के बाद उठाये जाने पर ईमान लाने की दावत देते हैं। वह निःसंकोच यह ऐलान करते हैं कि उनकी दावत कबूल करने और उन पर ईमान

लाने का इनआम जन्नत (स्वर्ग) और ख़ुदा की प्रसन्नता है।

दावत के सिलसिले में नबवी मिजाज व कार्यशैली का उत्तम उदाहरण उक़ब–ए–सानिया के बैअत (संकल्प) की घटना है। जब मदीना वासियों की एक संख्या जिन में 73 पुरुष और 2 स्त्रियां थीं हज के लिए मक्का आये और उक़बः के पास घाटी में इकट्ठा हुए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने चचा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के साथ (जो अभी तक मुसलमान नहीं हुए थे), पधारे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुर्आन की आयत का सस्वर पाठ (तिलावत) किया, एक ईश्वर की ओर दावत और इस्लाम की तरफ़ शौक दिलाया और फ़रमाया कि तुम से मैं यह बैअत (संकल्प) लेता हूं कि तुम मेरे साथ हिफ़ाज़त और ख़्याल रखने का वही मामला करोगे जो अपने घर वालों के साथ करते हो। अन्सार ने बैअ़त की और आपसे यह वादा लिया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनको छोड़ कर फिर अपनी क़ौम में वापस न जायेंगे वह समझदार थे और इस संकल्प के दूरगामी और ख़तरनाक नतीजों से भली प्रकार वाक़िफ़ थे। वह समझते थे कि वह तमाम करीबी कबीलों, बल्कि पूरे मुल्क अरब से दुश्मनी मोल ले रहे हैं। उनके एक अनुभवी साथी (अब्बास बिन उबादः अन्सारी) ने भी उनको आगाह और होशियार किया लेकिन उन्होंने जवाब में एक स्वर हो कर कहा कि हम माल व जागीर के नुकसान और अपने खानदान के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के क़त्ल हो जाने का खतरा मोल लेते हुए आपको ले जा रहे हैं। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से विभोर हो कर उन्होंने निवेदन किया, ऐ! अल्लाह के रसूल अगर हमने वादा वफा कर दिखलाया तो हमें क्या मिलेगा।

ऐसे नाज़ुक मौक़े पर अगर ख़ुदा के पैग़म्बर की जगह कोई सियासी लीडर, कोई नेशनल लीडर या केवल सियासी सूझ–बूझ का कोई इन्सान होता तो उसका जवाब यह होता कि बिखराव के बाद अब तुम्हारा गठजोड़ होगा, एक क़बीले की मामूली हैसियत के बाद अब पूरे अरब में तुम्हारे अस्तित्व को स्वीकार किया जायेगा और तुम एक ताक़त बन कर उभरोगे। यह कोई काल्पनिक बात न थी, स्वयं इन मदीना वासियों में से एक कहने वाले ने इससे पूर्व कहा था किः–

''हम अपनी क़ौम को इस हाल में छोड़ कर आये हैं कि शायद ही किसी क़ौम में ऐसी दुश्मनी और फूट हो जैसा हमारी क़ौम में है, हमें उम्मीद है कि ख़ुदा आपके द्वारा इनको जोड़ दे। अब

हम उनके पास जायेंगे और आपकी यह दावत उनके सामने पेश करेंगे, और जिस दीन को हमने कबूल किया है उनको भी इसकी दावत देंगे। अगर ख़ुदा आपकी ज़ात पर उनको जोड़ दे तो आपसे बढ़ कर कोई सत्ताधारी प्रतिष्ठित व्यक्ति न होगा।''

(सीरते इब्ने हिशाम पेज 429)

लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके इस सवाल के जवाब में कि ''ऐ अल्लाह के रसूल फिर हमें क्या मिलेगा?'' सिर्फ इतना कहा कि ''जन्न्त''। उस समय उन्होंने निवेदन किया कि हुजूर हाथ बढ़ाइये। आपने अपना मुबारक हाथ बढ़ाया और उन्होंने बैअ़त कर ली।

(सीरते इब्ने हिशाम पेज 446)

इसी ग़ैरत और नबियों वाले काम के पूरा होने का असर है कि पैग़म्बर किसी शरई हुक्म (धार्मिक आदेश) में किसी तब्दीली के न रवादार होते हैं और न किसी हुक्म पर अमल किसी, की सिफारिश और असर से टाल देते हैं। वह निकट व दूर अपने पराये सब पर समान रूप से अल्लाह के हुदूद (सीमाओं) व आदेशों को लागू करते हैं। बनी मख़जूम (क़बीले का नाम) की एक महिला के बारे में जिसने चोरी का अपराध किया था, उसामा पुत्र जैद (जिन पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ास मेहरबानी थी) सिफारिश करने के लिए उपस्थित हुए तो आपने क्रोधित हो कर कहा कि क्या अल्लाह की निर्धारित सीमाओं के बारे में सिफ़ारिश करते हो? फिर आपने सम्बोधित किया कि ''ऐ लोगो! तुम से पहले उम्मतें इसलिए ख़त्म हुईं कि जब उन में कोई प्रभावशाली व्यक्ति और खानदानी आदमी चोरी करता तो उसको छोड़ देते और जब कोई कमज़ोर और मामूली आदमी चोरी करता तो उसे सज़ा देते। कसम है खुदा–ए–पाक की अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करेगी तो मैं उसका हाथ काटने से संकोच न करूंगा।''

यही वह गैरत है जो नबियों के सत्संगियों (सहाबा) व उत्तराधिकारियों में ट्रांस्फर हुई। उन्होंने भी कामयाबी व नाकामी और नफा व नुक़सान से आंखें बन्द करके कुर्आनी शिक्षा, शरअई अहकाम (आदेशों) और इस्लाम के नियम–क़ानून की रक्षा की। इतिहास में इसकी शानदार मिसाल फारूक़ आज़म रज़ि0 की वह घटना है जो जबलः पुत्र ऐहम ग़स्सानी के साथ पेश आयी। वह कबीला अक्क व ग़स्सान के पांच सौ लोगों के साथ मदीना आया। जब उसने मदीना में प्रवेश किया तो कोई जवान व पर्दानशीन औरत ऐसी न थी जो उसको और उसके ज़र्क़ बर्क़ लिबास को देखने के लिए न निकल

आई हो। और जब हज़रत उमर फ़ारूक़ हज के लिए गये तो जब्लः भी साथ गया। वह काबा का तवाफ कर ही रहा था कि बनी फिजारः के एक व्यक्ति का पैर उसके लटकते हुए तहबन्द की कोर पर पड़ गया और वह खुल गया, जब्लः ने हाथ उठाया और फिज़ारी की नाक पर ज़ोर का थप्पड़ मारा। फिज़ारी ने हज़रत उमर के यहां शिकायत की फ़ारूक़–ए–आज़म ने जब्लः को बुला भेजा। वह जब आया तो उससे पूछा कि तुमने यह क्या किया? उसने कहा कि हां, अमीरुल मोमिनीन! इसने मेरा तहबन्द खोलना चाहा था, अगर काबा का सम्मान रुकावट न डालता तो मैं इसके माथे पर तलवार का वार करता। हज़रत उमर रज़ि0 ने फरमाया, तुमने इकरार कर लिया अब या तो तुम उस व्यक्ति को राज़ी कर लो वरना मैं किसास (बदला) लूंगा। जब्लः ने कहा कि आप मेरे साथ क्या करेंगे? हज़रत उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि उससे कहूंगा कि तुम्हारी नाक पर वह वैसे ही चोट लगाए जैसी तुमने उसकी नाक पर लगाई, जब्लः ने हैरत से कहा कि अमीरुल मोमिनीन! यह कैसे हो सकता है? वह एक आम आदमी है, और मैं अपने इलाक़े और क़ौम का ताजदार (शासक) हूं। हज़रत उमर रज़ि0 ने फरमाया कि इस्लाम ने तुमको और उसको बराबर कर दिया, अब सिवाय तकवा (परहेज़गारी) और आफियत के किसी और चीज़ की बुन्याद पर तुम उससे अफ़ज़ल नहीं हो सकते। जब्लः ने कहा कि मेरा ख़्याल था कि मैं इस्लाम क़बूल करके जाहिलियत के मुक़ाबले में ज़ियादा इज्ज़त व एतबार वाला हो जाऊँगा। हज़रत उमर रज़ि0 ने फरमाया, यह बातें छोड़ो। या तो इस व्यक्ति को राज़ी कर लो वरना किसास (बदला) के लिए तैयार हो जाओ।

जब्ला ने जब हज़रत उमर रज़ि0 के तेवर देखे तो कहा कि मुझे आज रात ग़ौर करने का मौक़ा दिया जाये। हज़रत उमर रज़ि0 ने उस की प्रार्थना स्वीकार की। रात के सन्नाटे और लोगों की लाइल्मी में जब्ला अपने घोड़ों और ऊँटों को लेकर सीरिया की तरफ़ रवाना हो गया। सुबह मक्का में उसका पता निशान न था। एक ज़माना के बाद जब जुसामा पुत्र मसाहिक कनानी से जो उसके दरबार में शरीक हुए थे हज़रत उमर रज़ि0 ने उसके शाहाना ठाठ–बाट के हालात सुने तो सिर्फ यह फ़रमाया, ''वह महरूम रहा। आख़िरत के बदले में दुन्या खरीद ली। उसकी तिजारत खोटी रही।''

जारी.....

❖❖❖

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी रह0 —अनुवादः अतहर हुसैन

दूसरे ख़लीफा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के शासन काल के हाकिम हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि0 का वर्णन

ओढ़ना-बिछौनाः-

मकान का वर्णन तो ऊपर किया जा चुका है, वस्त्रों में सादगी इससे भी बढ़ कर थी। न ओढ़ने की विशेष रूप से चिन्ता होती और न बिछाने की। ज़रूरत पड़ने पर जो अबा (लम्बा कुर्ता) शरीर पर होता उसका एक भाग बिछा लेते और एक भाग ओढ़ लेते।

अपना काम अपने हाथः-

खेत से तरकारी स्वयं ही तोड़ कर लाते, अधिक भार होता तो एक थैले में भर कर डण्डे में लटकाते और डण्डा अपने कन्धे पर रख लेते।

आज नहीं कलः-

एक युद्ध के मौक़े पर आप सेनापति की हैसियत से कार्य कर रहे थे। हज़ारों सैनिक आपके अधीन थे लेकिन आप बहुत सादगी के साथ एक ख़च्चर पर सवार आ गए। सैनिकों ने श्रद्धाभाव से कहना शुरु किया, "सेनापति आ गये। सेनापति आ गये," परन्तु हज़रत सलमान रज़ि0 सांसारिक सम्मान को बेकार समझते थे, उनकी नज़र तो आख़िरत की ओर थी। सिपाहियों द्वारा स्तुति तथा प्रशंसा को सुन कर कहने लगे, भाई! आज क्या है, नेकी और बदी का फ़ैसला तो आज के बाद होगा।

प्रशंसा के उत्तर मेंः-

एक दिन कुरैश के बहुत से प्रतिष्ठित लोग जमा थे उनमें से प्रत्येक अपनी बड़ाई बयान कर रहा था। लोग प्रतीक्षा कर रहे थे कि हज़रत सलमान रज़ि0 क्या कहते हैं, लेकिन अल्लाह के इस बन्दे को गर्व तथा बड़प्पन से क्या सरोकार, यहां तो स्वभाव में विनय तथा नम्रता कूट-कूट कर भरी थी। कहने लगे- भाई! मैं किस बात पर गर्व करूँ? आरम्भ पर ध्यान करता हूं तो एक अपवित्र पानी की बूंद से पैदा हुआ और अन्त पर दृष्टि डालता हूं तो मालूम होता है कि एक दिन यह शरीर एक सड़ी-गली लाश में बदल जायेगा, फिर बाद में ज़िन्दगी के सारे कर्मों को तराजू के पलड़े में तौला जायेगा, यदि नेकियों तथा भलाइयों का पलड़ा भारी हुआ तो समझो सफलता प्राप्त हुई, नहीं तो सदा के लिए कष्ट तथा दण्ड का सामना है।

सेवा भावः-

श्रद्धकों की यही आकांक्षा रहती कि कभी किसी प्रकार की सेवा करने का अवसर मिले, लेकिन उन्हें मुश्किल ही से मौक़ा मिलता था। एक मर्तबा कोई व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करने के लिए आपके पास रहने लगा। उसने बहुत

कोशिश की कि उनकी सेवा करे और उन्हें कोई काम न करने दे, परन्तु हज़रत सलमान रज़ि0 भला कब यह गवारा कर सकते थे कि दूसरों से सेवा लें, अतः उस व्यक्ति ने जब भी कोई काम किया तो आपने उससे बढ़ कर सेवा कर दी। उसने आटा गूंधा तो आपने रोटी पका दी। उसने पशुओं को चारा दिया तो आपने पानी पिला दिया।

नौकर का ख़्यालः–

नौकरों से बहुत कम काम लेते थे और अधिक से अधिक काम स्वयं ही कर लिया करते थे। एक बार कोई व्यक्ति आपसे मिलने आया, देखा तो आप आटा गूंध रहे हैं। उसने आश्चर्य से पूछा ''आप यह क्या कर रहे हैं?'' आपने उत्तर दिया ''नौकर को एक काम के लिए भेजा है, उस पर काम का दोहरा बोझ डालना उचित नहीं मालूम हुआ, बेचारा थका हुआ आयेगा, ऐसी दशा में उसके लिए और काम कष्ट दायक होगा। अतः मैंने सोचा कि उसका कुछ काम मैं ही कर डालूँ।

सिर पर घास का गट्ठाः–

ख़िदमत का इतना शौक़ था कि जिसको भी ज़रूरत होती, हर्ष पूर्वक उसका काम कर देते। मदाइन की गवर्नरी ही के ज़माने में एक बार की घटना है कि सीरिया देश की ओर से एक व्यक्ति शहर की ओर आ रहा था। उसके पास घास का एक गट्ठा था। हज़रत सलमान रज़ि0 मोटे–झोटे कपड़े पहने अति सरल वेष–भूषा में खड़े हुए थे। उसको ख़्याल भी न हुआ कि यह गवर्नर हैं। मामूली आदमी समझ कर उसने हुक्म दिया कि यह गट्ठा उठा कर ले चलो। हज़रत सलमान रज़ि0 ने चुप चाप गट्ठा सिर पर रख लिया और उस व्यक्ति के साथ चुप चाप चल दिए। नगर में प्रविष्ट हुए तो लोगों ने कहना शुरु किया ''यह अमीर हैं।'' यह सुन कर वह आदमी बहुत घबराया और बहुत ही लज्जित हो कर निवेदन करने लगा ''मैं आप को पहचानता न था अन्यथा ऐसी भूल कभी न होती।'' परन्तु हज़रत सलमान रज़ि0 के लिए यह कोई अनोखी बात तो थी नहीं, वह तो इस प्रकार की सेवाओं की तलाश में रहते थे और इसे आख़िरत में नजात का एक ज़रिया समझते थे। उस व्यक्ति की घबराहट को देख कर कहने लगे, ''परेशान मत हो, मैं तुम्हारे घर तक यह बोझ पहुंचा दूंगा। मैंने तो शुरु ही से यह नियत कर ली थी कि बिना तुम्हारे घर पहुंचे इसे न उतारूंगा।

नम्रताः–

कहा करते थे, ''जो व्यक्ति इस संसार में ख़ुदा के लिए विनय तथा नम्रता इख़्तियार करता है उसे अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन सम्मानित करता है।'' एक दिन किसी व्यक्ति से पूछा ''तुम्हें मालूम है कि क़यामत के अन्धकार की वास्तविकता क्या है?'' उसने

उत्तर दिया, ''मुझे ज्ञात नहीं।'' आपने कहा ''इस संसार में जो लोग दूसरे पर अत्याचार करते हैं, यही क़यामत के दिन अन्धकार का रूप धारण कर लेगा।''

मौत के बाद की जवाबदेही की हर समय चिनता रहती। एक बार एक नगर पर विजय प्राप्त हुई। फ़तह के बाद लोग शहर में दाख़िल हुए तो खाने–पीने की चीज़ों के बड़े–बड़े ढेर लगे थे। एक व्यक्ति आपके साथ चल रहा था, इतना सामना देख कर कहने लगा, देखिए अल्लाह ने क्या कुछ प्रदान किया है। उसकी यह बात सुन कर आपने कहा, ''किस बात पर प्रसन्नचित्त हो रहे हो? हर–हर दाने के साथ पूछ–गछ की जो ज़िम्मेदारी है ज़रा उसका भी तो ख़्याल करो।''

देहान्त के समयः–

ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि सारा जीवन एक मुसाफ़िर की तरह गुज़ार दिया किन्तु फिर भी देहान्त के समय आंखों से आंसू जारी थे और ज़ार–क़तार रो रहे थे। लोगों ने पूछा, रोने की क्या बात है, आख़िर आप इतना परेशान क्यों हो रहे हैं? आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रह कर इस्लाम की बड़ी सेवाएं की हैं, जिहाद में शरीक हो चुके हैं, बड़ी–बड़ी लड़ाईयों में विजेता रहे हैं, आपको किस बात की चिन्ता है? कहने लगे, ''मेरे सर्वप्रिय सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब इस संसार से कूच कर रहे थे तो आपने हम लोगों से वचन लिया था कि मोमिन के लिए बस इतना सामान काफ़ी है जो एक मुसाफ़िर के पास होता है। मेरे चारों ओर इतना सामान जमा है, मैं मौत से नहीं डर रहा हूं, बल्कि मेरे रोने का कारण यह सामान है।'' लोगों ने देहान्त के पश्चात् घर के सारे सामान का अन्दाज़ा लगाया तो एक पलंग, एक बिस्तर और थोड़े से सामान के अतिरिक्त कुछ भी दिखायी न दिया। समस्त छोड़े हुए सामान की क़ीमत का अंदाज़ा लगाया गया तो बीस दिर्हम (20 चांदी की चवन्नी के बराबर) था।

अन्याय तथा अत्याचार से घृणाः–

स्वभाव में बहुत ही नम्रता थी। कहा करते थे कि इस संसार में खुदा के वास्ते नम्रता क़यामत में प्रतिष्ठा तथा सम्मान दिलाएगी। ज़ोर तथा जुल्म से उन्हें अति घृणा थी। इसका बड़ा ध्यान रखते थे कि किसी पर भी उनकी ओर से अन्याय न होने पाये। अन्याय को सोचने पर ही कांप जाते थे। कहा करते थे कि इस संसार में जो लोग एक दूसरे को सताते रहते हैं यही अत्याचार क़यामत के दिन अन्धकार का रूप धारण कर लेंगे और लोगों की आंखों के सामने ऐसा घटाटोप अंधेरा छा जायेगा कि उन्हें जन्नत का मार्ग भी न दिखायी देगा।

❖❖❖

जारी.....

एक रोशन दिमाग़ था, न रहा

मौलाना वाज़ेह रशीद के इन्तिक़ाल पर चन्द तअस्सुरात

—मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी —प्रस्तुतिः मुहम्मद गुफ़रान नदवी

बड़े अफ़सोस के साथ यह अन्दोहनाक ख़बर (शोक समाचार सुनी गई कि मशहूर आलिमे दीन, अरबी ज़बान के बेमिसाल अदीब, नदवतुल उलमा के मोतमद तालीम, पंद्रह रोज़ह अरबी रिसाले के चीफ़ एडीटर आलमी राबत—ए—अदब इस्लामी के जनरल सिक्रेट्री, मेरे मुख़लिस वफ़ा—शिआर रफ़ीक़ मौलाना सय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी 16 जनवरी 2019 ई0 को तुलुए सुब्ह सादिक़ के आख़िरी लमहात में दारे आख़िरत की तरफ़ रवाना हो गये।

मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी ख़ान वाद—ए—अलमुल्लाही के अहम फ़र्द थे, मेरे मुरशिद व मुरब्बी मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी के हक़ीक़ी भांजे और उस्ताज गरामी क़दर मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी के छोटे भाई थे, उन की पैदाइश 20 नवम्बर 1933 ई0 को तक़या कलां रायबरेली में हुई, वह मुझ से दरज़े में दो साल आगे थे, फ़राग़त के बाद वह आलइण्डिया रेडियो देहली में मुलाज़िम हो गये और 1973 ई0 तक वहां रहे, इस दरमियान भी उनकी नदवा आमद व रफ़्त रहती, मेरे दोस्त और मुख़लिस रफ़ीक़ मौलाना मुहम्मद अल—हसनी उनके बिरादरे निस्बती थे, हम दोनों में बड़ी बे तकल्लुफ़ी थी वह हम दोनों की मजलिस में शरीक होते, और इल्मी और अदबी मौज़ूआत पर अच्छी गुफ़तगू होती थी।

1973 ई0 में वह दारुल उलूम नदवतुल उलमा में तदरीस (पढ़ाने) के लिए आये, और उसी वक़्त से आख़िर तक तदरीसी ख़िदमात अनजाम देते रहे, फिर इल्मी और अदबी मजालिस का लुत्फ़ दोबाला हो गया, वह पन्द्रह रोज़ा ''अल—राइद'' के एडीटर बनाए गये, और ''अल—बअ़स'' में भी शरीके इदारत रहे, हालाते हाज़िरह पर उनके मज़ामीन बड़े तजज़ियाती और मुदल्लल (विश्लेशण युक्त और तर्क युक्त) होते थे, वह उर्दू, अंग्रेज़ी और अरबी तीनों ज़बानों में महारत रखते थे, इसीलिए तीनों ज़बानों की सहाफ़त (पत्रकारिता) पर गहरी नज़र थी, दुन्या के हालात पर उनका अध्ययन बड़ा गहरा था, वह दरजनों किताबों के लेखक थे, फिकरी मौज़ूआत (चिन्तनीय विषयों) पर उनकी कई

किताबें हैं। यूरोप के तालीमी नज़रियात से वाक़िफ़ (परिचित) थे और उसके उत्थान व पतन के इतिहास का ख़ूब अध्ययन किया था जिसकी झलक उनकी गुफ़्तगू में नुमायां थी, वह किसी मसअले पर बहस करते तो उसके सारे पहलुओं को पेशेनज़र रखते, आमतौर पर वह तक़रीर नहीं करते थे, लेकिन जब भी तक़रीर की, मवाद (तत्व) से भरपूर तक़रीर की, वह आ़ाला इल्मी ज़ौक़ के हामिल, यकसूई, केआदी, इनफ़िरादियत पसन्द और गोशागीर और बेलौस थे।

मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 क़लम के मुजाहिद थे उन्होंने एक तवील ज़माने तक क़लम से जिहाद किया और ऐवानेबातिल (शैतानी ताक़तों) को ललकारा, मुदाहनत (मिथ्याचार) और दोहरी पालिसी के क़ाएल नहीं थे, बहुत साफ़ दिल और आला दिमाग़ के मालिक थे, ओहदा व मनसब से दूर रहते थे, माल व मनाल की ज़रा भी परवाह न थी, नदवतुल उलमा के मोतमद तालीम का ओहदा जब संभाला तो अपनी तनख़्वाह से दस्तबरदार हो गये और रज़ाये इलाही के साथ इस ख़िदमत को अनजाम देते रहे, दारुल उलूम के तालीमी निज़ाम को मुसतहकम बनाने में उनके मशवरे बड़े क़ीमती और मुफ़ीद होते थे, असातिज़ह को भी इनफ़िरादी मुलाक़ातों में अपने कर्तव्य पालन की चेतावनी देते, उन पर हर समय अच्छे व्यक्तित्व की रचना की चिन्ता रहती, उन्होंने कई पीढ़ियों की शिक्षा और दीक्षा की, और उनको अरबी भाषा और साहित्य का अच्छा ज्ञानी बना दिया। शुरु ही से अरबी भाषा और साहित्य का अध्ययन उनका विषय था, वह भाषा का रहस्य भली भांति जानते थे उसी के अनुकूल वह पढ़ाते थे, वह कम बोलने वाले आदमी थे परन्तु उन की बातें अर्थ पूर्ण होती थीं, उनकी वफ़ात से नदवतुल उलमा में एक बड़ा ख़ला पैदा हो गया है। नदवा अपने एक इल्मी व तालीमी मुहसिन (उपकारी) से महरूम हो गया। वह दुन्या से तो चले गये लेकिन अपने शागिरदों पर गहरी छाप छोड़ गये। अहले इल्म अहले फ़िक्र में उनका विशेष स्थान था जिस पर उनकी किताबें गवाह हैं।

उन्होंने अपने पीछे इल्मी दीनी सलाहियतों से भरपूर एक कुंबा छोड़ा, उनके साहबज़ादे मौलाना सय्यद जाफ़र मसऊद हसनी नदवी हैं उनकी कई औलादें हैं, जो माशा अल्लाह जी इस्तेदाद (क्षमतापूर्ण) और बासलाहीयत हैं। उनके अलावा शागिरदों की बड़ी संख्या गिरया कुना है।

❖❖❖

—हिन्दी लिपि में उर्दू

सहा-बए-किराम की मिसाली ज़िन्दगी

—सय्यिद मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

रसूले अकरम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पैग़ामे, दावत और नबवी तरबीयत से ऐसे नेक, सालेह और मुत्तक़ी अफराद तैयार किये जो अल्लाह की वह़दानियत पर सच्चा ईमान व पक्का यक़ीन रखते थे, अल्लाह से डरते थे, दुन्या पर आख़िरत को तरज़ीह देते थे, दुन्यावी माल व मताअ़ की उनकी नज़रों में कोई हैसीयत नहीं थी, अपनी ईमानी रूह़ानी क़ुव्वत से माद्दीयत पर क़ाबू पा लिया था, उनका यक़ीने रासिख़ था कि दुन्या उनके लिए पैदा की गई है और ख़ुद आख़िरत के लिए पैदा किये गये हैं, वह तिजारत में सच्चे और अमीन थे, फ़क़्र व फ़ाक़ा में भी इज्ज़ते नफ़्स और इंसानी शराफत का दामन उनके हाथ से नहीं छूटने पाया, हर ह़ाल में साबिर व शाकिर थे, क़ौल व क़रार के पक्के थे, अ़मल में खैरख्वाही और हमदर्दी के पैकर थे, जिम्मेदारियों को पूरा करने में मुख़्लिस और अमानतदार थे, हुकूमत, इक्तिदार और ग़लबे की ह़ालत में रह़म दिल, मुतवाज़े और मिलनसार थे और बैतुलमाल के बेह़तरीन मुह़ाफिज़ और वाक़िफकार ख़ाज़िन थे।

इसी क़ुदसी और नबवी तरबीयत याफ़्ता जमाअ़त के फज़्ल से क़र्ने अव्वल में इस्लाम पूरी दुन्या में फैला, लिहाज़ा सहा—बए—किराम रज़ि0 इस उम्मत के खुलासा और इत्र हैं, बल्कि अंबिया और रसूलों के बाद पूरी नौअ़े इंसानी में सबसे अफ़्ज़ल और बरतर हैं, अल्लाह को एक माना, इस्लाम को अपना दीन माना, और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल माना, ये ईमान उनके दिलों में पहाड़ की तरह रासिख़ और मुसतह़कम था, ईमान लाते ही उनकी दुन्या बदल गयी, गोया अभी पैदा किये गये हों, उनका तारीक़ माज़ी रोशन हो गया, उनके वजूद में ईमान की लहर दौड़ गयी, अब बस एक ही मक़सद था कि अल्लाह की रिज़ा व ख़ुश्नूदी हासिल हो जाये, उन पर आख़िरत में अपने रब से मुलाक़ात का शौक़ छा गया और उस जन्नत की तलबे सादिक़ पैदा हो गयी। जिसकी वुसअ़त ज़मीन व आसमान की वुसअ़त के बराबर बयान की गयी है, सहा—बए—किराम रज़ि0 ने ईमान के रास्ते में अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया, अल्लाह की रिज़ा की खातिर अपना वतन छोड़ा, घर—बार छोड़ा, तरह—तरह की अज़ीयतें और मशक़्क़तें बरदाश्त कीं, जिहाद किया, अल्लाह और उसके रसूल के लिए कुर्बानियां दीं, उन्हीं की बदौलत इस्लाम का बोल

बाला हुआ, उसको कुव्वत व इस्तेह़काम हासिल हुआ और फिर इस्लाम में लोग जूक़ दर जूक़ दाख़िल हो गये।

वफाते रसूल के बाद सहा–बए–किराम रज़ि0 इस्लाम के सच्चे दाअ़ी व सिपाही बन गये, इस्लाम के परचम को बुलन्द किया और दुन्या के चप्पे चप्पे में इस्लाम और उसकी तालीमात को आ़म किया, ज़िन्दगी की आख़िरी सांसों तक इस्लाम की दावत देते रहे और उसकी खिदमत करते रहे, लोगों को कुफ़्र व शिर्क की तारीकियों से निकाल कर तौहीद की रोश्नी की तरफ़ लाए और दुन्या और आख़िरत की सआ़दत से सरफराज़ किया।

सहा–बए–किराम रज़ि0 की नस्ल मुम्ताज़ तरीन और अफज़ल तरीन नस्ल है जिसकी इस्लामी दावत की तारीख़ में मिसाल नहीं मिलती, बल्कि अंबिया की उम्मतों की तारीख़ में ऐसा नमूना नज़र नहीं आता, सहा–बए–किराम के फज़्ल व एहसान का इनकार हटधर्मी और सरकश शख़्स ही कर सकता है, तमाम सदियों में इस उम्मत पर उनके एहसानात हैं और वह बग़ैर किसी तफरीक़ व इम्तियाज़ के क़ियामत तक नमूना और मेयार हैं।

बिला शुब्हा तमाम सहा–बए–किराम रज़ि0 नबवी मदरसे के फ़ैज़याफ़्ता हैं और शजरे नबवी के फल हैं और इब्तिला व आज़माइश के मुख़्तलिफ मराहिल से गुज़र कर "परवा–नए–इलाही रज़ियल्लाहु अन्हुम" से सरफराज़ हुए, इस कुदसी जमाअ़त पर जिससे अल्लाह और उसका रसूल राज़ी हुआ, अगर कोई कीचड़ उछालता है तो वह दरहक़ीक़त नबवी तालीम व तरबीयत और शजरे नबवी पर कीचड़ उछालता है।

सहा–बए–रसूल ने इताअ़ते ख़ुदा, इत्तिबाए रसूल, अवामिर के निफाज़ और मनहियात से इज्तिनाब में आला तरीन मिसाल क़ाइम की है, जिसकी कोई नज़ीर नहीं मिलती, यही वह कुदसी जमाअ़त है जिसके जरिये इस्लाम अपनी सहीह़ शक्ल व सूरत में हम तक पहुंचा है, पूरी उम्मत उनके एहसानात से गिरांबार है, सहा–बए–किराम रज़ि0 ने इस्लाम की सरबुलन्दी और उसकी इशाअ़त की ख़ातिर जो बेमिसाल कुर्बानियां दीं हैं, जिन आज़माइशों से गुज़रे हैं, और ख़ुदा और रसूल की इताअ़त व इनक़ियाद के जो अनमिट नुक़ूश छोड़े हैं वह सब तारीख़ की किताबों में मौजूद हैं, ग़ैरों ने भी सहा–बए–किराम रज़ि0 के मक़ाम व मर्तबे का एतिराफ़ किया है।

इस्लामी तारीख़ का यह बड़ा अलमिया है कि शरअ़ी उलूम (तफ़्सीर, हदीस और फिक़्ह) से इश्तिग़ाल की वजह से मुअर्रिख़ीन व मुसन्निफीन ने तारीख पर कोई ख़ास तवज्जुह नहीं

दी। नतीजतन तारीख के मौज़ू पर ऐसे लोगों ने कलम उठाया जिन्होंन तारीख़ी रिवायात व वाक़ियात के सिलसिले में उस उसूल व मेयार का ख़्याल नहीं रखा जो रिवायते हदीस में इख़्तियार किया गया, सिर्फ रिवायात इकट्ठा कर दी गईं और उनकी छानबीन नहीं की गयी, बाज़ मुअर्रिख़ीन ने इसका ऐतिराफ भी किया है, ख़ुद असफहानी अपनी मशहूरे जमाना किताब ''अलअग़ानी'' में इस का ऐतिराफ किया है, उन मुअर्रिखीन में ऐसे लोग भी घुस आए जो रिवायात के नक़्ल में मुहतात नहीं थे, बल्कि अपनी किताबों में रत्ब व याबिस हर तरह की चीज़ों और इख़्तिलाफी रिवायतों को दाख़िल कर दिया, बल्कि बाज़ अ़ज़ीम इस्लामी शख्सियतों के तअ़ल्लुक़ से इफ़्तिरा परदाजी से भी गुरेज़ नहीं किया और उनकी तरफ मनगढ़न्त बातें मनसूब कर दीं, इसी वजह से तारीख़ी रिवायात में तज़ाद और टकराव पाया जाता है, अल्लामा इब्ने ख़ल्लदून ने अपने मुक़द्दमा में इसकी तरफ इशारह किया है।

उसके बाद मुस्तश्रिक़ीन का दौर आया और उन्होंने तारीख़ और सीरते नबवी को मौज़ूअ़ बनाया और ऐसे मसाइल उठाये जिन से बाज़ इस्लामी शख़्सियतों के तअल्लुक़ से शुब्हात पैदा हुए, फिर उनके अरब और गैर अरब शागिर्दों ने उन शुकूक व शुब्हात को और हवा दी और मुअस्सिर अन्दाज़ में बढ़ा चढ़ा कर पेश किया और आज भी इस्लामी तारीख़ को एक मख़्सूस ज़ाविये से पेश करने का अमल जारी है, इस प्रोपेगण्डा से वह मुसलमान मुअर्रिख़ीन भी मुतअस्सिर हुए जिन की तालीम व तरबीयत मुसतश्रिक़ीन के ज़ेरे असर हुई, या इस्लामी मौज़ूआ़त पर मुसतश्रिक़ीन ही की लिखी हुई किताबों को मरजअ़ बनाया, उसकी मिसाल डॉक्टर ताहा हुसैन की किताब ''सिलसिलतुल–फित्नतिल–कुबरा'' है जिन लोगों ने मुशाजराते सहाबा को मौज़ूअ़ बनाया, उनका मरजअ़ अस्फहानी की किताब ''अल–अग़ानी'' रही है, अस्फहानी एक पेशावर साहिबे क़लम था, उसने हिजाज़ के मुआ़शरे की जो बदनुमा तस्वीर पेश की है वह इस ज़माने में भी तसव्वुर से बाहर है, और ऐसी रिवायात नक़्ल कर दी हैं जिन से सहा–बए–किराम का मुक़ाम व मर्तबा और ऐतिबार मजरूह होता है।

मौजूदा अहद में एक बार फिर ऐसी कोशिशें हो रही हैं और ऐसी किताबें और मक़ालात लिखे जा रहे हैं जिनसे इस्लामी तारीख़ का रोशन चेहरा दाग़दार हो रहा है और बाज़ इस्लामी शख़्सियतों को और तारीख़ में उनके मिसाली किरदार को निशाना बनाया जा रहा है, हत्ता की सहा–बए–किराम,

उम्महातुल मोमिनीन और सहाबीयात को निशाना बनाया जा रहा है, उन मुअर्रिख़ीन और मक़ालानिगारों का मरजअ़ वह किताबें हैं जो तीसरी और चौथी सदी हिज्री में तस्नीफ की गयीं जबकि इस्लामी मआ़शरा मुख़्तलिफ अ़नासिर पर मुश्तमिल था, ख़ुसूसन फारसियों (इरानियों) का ग़लबा था जिनका दिल साफ़ नहीं था और उनके दिल व दिमाग़ में अरबों के हाथों क़ादसिया की फ़तह का ज़ख़्म मुन्दमिल नहीं हुआ था, फिक़ही मसालिक और फिरकों की वजह से भी बाज़ सहाबा को निशाना बनाया गया।

पेशे नज़र रिसाले में कोशिश की गई है कि सहा–बए–रसूल के उन पहलुओं को सामने लाया जाये जो आम तौर पर नज़रों से ओझल रहते हैं, यह रिसाला अस्लन उन मक़ालात का खुलासा और तर्जुमा है जो फज़ाइले सहाबा पर मुनअ़क़िद सेमीनारों में पेश किये गये और बाज़ अरबी रसाइल व मजल्लात में प्रकाशित हुए, और फिर किताबी शक़्ल में प्रकाशित हुए, अब उर्दू दाँ तब्क़े के लिए पेश किये जा रहे हैं, यह काम मेरे इल्मी मुआ़विन मौलवी मुहम्मद वसीक़ नदवी (उस्ताद तफ़सीर व अदब दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ) ने अंजाम दिया है, उन्हें इसका बड़ा सलीक़ा और ज़ौक है। वह इससे पहले भी कई मज्मूए मुरत्तब कर चुके हैं, अरबी से उर्दू में तर्जुमा के साथ हवाला जात की मुराजअत भी की है। अल्लाह तआला इस अमल को क़बूल फरमाए और हम सब को रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और अस्हाबे रसूल की महब्बत नसीब फरमाये।

(आमीन)

नोटः हज़रत मौलाना वाजेह रशीद हसनी नदवी रह0 (जिनका देहान्त 16 जनवरी 2019 को हुआ) का यह अन्तिम लेख उर्दू भाषा में उन की अन्तिम पुस्तिका (रिसाला) ''सहा–बए–किराम की मिसाली ज़िन्दगी'' का ''पेश लफ़्ज़'' है इसको ज्यों का त्यों हिन्दी लिपि में सच्चा राही में दिया जा रहा है। कुछ कठिन शब्दों के अर्थ नीचे दिये जा रहे हैं।

(सम्पादक)

कठिन शब्दों के अर्थः

मिसाली ज़िन्दगी=आदर्श जीवनी, यक़ीने रासिख़= पक्का विश्वास, मुतवाज़े= विनीत, बैतुलमाल= इस्लामिक राजकोष, क़र्ने अव्वल= प्रथम काल, अज़ीयतें= कष्ट, फ़ैज़याफ़्ता= लाभ प्राप्त किये हुए, गिरांबार= आभारी, इनक़ियाद= आज्ञा पालन, इश्तिग़ाल= व्यस्त होना, रत्ब व याबिस= भला बुरा, इफ़्तिरा परदाज़ी= मिथ्या –रोपण, मुशाजराते सहाबा= सहाबा की पारस्परिक लड़ाइयाँ, मुनअ़क़िद= आयोजित, सहाबा= सहाबी का बहुवचन, सहाबी= जिसने ईमान की हालत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा हो और ईमान की ही हालत में उसकी मौत हुई हो उसको सहाबी कहते हैं।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः बहुत से लोग कारोबार के लिए बैंक से क़र्ज लेते हैं जिसे किस्तवार हर माह अदा करते हैं, इस क़र्ज़ को सूद के साथ वापस करना होता है, क्या इस तरह सूदी क़र्ज़ लेना जाइज़ है?

उत्तरः जैसे सूद का लेना हराम है, उसी तरह शदीद मजबूरी के बगैर सूद देना भी हराम है, इसलिए महज़ कारोबार को वुसअ़त देने और कारोबार को बढ़ाने के लिए सूदी क़र्ज़ लेना जाइज़ नहीं जो शख़्स बेरोज़गार हो और कोई जरी—अ़ए—मअ़ाश (कमाने का साधन न हो इसी तरह किसी और ज़रूरत के तहत बहुत मजबूर शख्स के लिए सूदी कर्ज़ लेने की गुंजाइश है।

(अल इशबाह वन्नज़ाइरः149)

प्रश्नः जैद ने एक गैर मुस्लिम से कुछ साल पहले कुछ तामीरी अशया उधार ली थी, बाद में कुछ रक़म अदा कर दी गई लेकिन कुछ रक़म बाक़ी रह गई जो अदा न हो सकी, बाद में उस दुकान का कुछ पता नहीं चल सका क्योंकि दुकान ख़त्म हो गई थी, मालिके दुकान का भी कुछ पता नहीं चल सका कि वह है भी या नहीं, अब उस रक़म का क्या किया जाये?

उत्तरः पहली बात तो यह कि इम्कान भर दुकान के मालिक को तलाश करने की कोशिश की जाये, अगर न मिल पाये तो वह पैसे सद्क़ा कर दें लेकिन यह नीयत रखें कि आइन्दा अगर अस्ल मालिक से मुलाक़ात हो गई तो उसे अदा कर देंगे जैसा कि गुमशुदा अशया मिलने का हुक्म है, कि अगर सद्क़ा कर दिया हो और बाद में अस्ल मालिक मिल गया तो उस को उस का बदल अदा करना वाजिब है।

(अल हिदायाः 2/615)

प्रश्नः अगर किसी को कर्ज़े हसना दिया जाये तो क्या उस कर्ज़ के बारे में कागज़ पर लिख लेना बेहतर है?

उत्तरः अल्लाह तआला का इरशाद है कि जब एक मुकर्रेरा मुद्दत के लिए दैन (कर्ज़) का मुआमला करो तो उसे लिख लिया करो। (अल बकराः 282) इससे इख्तिलाफ व निजाअ़ (झगड़े) के मवाके कम हो जाते हैं, इसीलिए कर्ज़ को लिख लेना बेहतर है और लोगों को समझाने की ज़रूरत है कि ऐसी तहरीर में लिखने का मक़सद बे एतिमादी नहीं है बल्कि मुआमलात की सफाई है।

प्रश्नः हम लोग यहां ख़िदमते ख़ल्क़ के नुक़—तए—नज़र से (जन सेवा की दृष्टि से) कुछ सामान रख कर बिला सूदी कर्ज़ देते हैं, लोग सामान रख कर बरसों नहीं आते हैं,

इन्तिज़ार के बाद हम उस सामान को बेच देते हैं, क्या ऐसा करना जाइज़ है?

उत्तरः आप कर्ज़ देते वक़्त उनसे लिखवा लिया करें कि ''अगर मैंने मुकर्ररा तारीख़ पर कर्ज़ अदा नहीं किया तो इदारे को हक़ होगा कि मेरा रिहन रखा हुआ सामान फरोख़्त करके अपना कर्ज़ वसूल कर ले'' ऐसी सूरत में आप के लिए यह बात जाइज़ होगी कि सामाने रिहन फरोख़्त कर दें और कर्ज़ वसूल कर लें और बची रक़म महफूज़ कर दें, जब वह आए तो उसे अदा कर दें, रिहन रखने वाला मकरूज़ ही सामान का अस्ल मालिक होता है, इसलिए जब तक उसकी इजाज़त न हो सामान फरोख़्त नहीं किया जा सकता।

(अलहिदाया अला हामिश फतहुल कदीरः 5/538)

प्रश्नः एक शख्स जेवरात की दुकान का मालिक है, उसे एक बैंक में सोने के जेवरात जो गिरवी रखे जाते हैं, उन्हें कसौटी पर परखने और असली व नकली की पहचान करने पर कमीशन मिलता है, बैंक से मिलने वाला कमीशन दुरुस्त होगा या नहीं, क्या उसे अपने खर्च में ला सकता है या नहीं?

उत्तरः कसौटी पर परखने और असली व नक़ली पहचान करने की उजरत लेना तो जाइज़ है लेकिन सूदी बैंक की पूरी आमदनी बुन्यादी तौर पर सूदी आमदनी होती है, इसलिए बैंक से इस तरह की उजरत लेना जाइज़ नहीं।

प्रश्नः एक शख्स ने एक मकान किराये पर लिया, बाद में मालूम हुआ कि मालिके मकान का सूदी कारोबार है तो क्या उसके लिए उस मकान को किराये पर लेना दुरुस्त है या उसको मकान खाली कर देना चाहिए?

उत्तरः अगर उसने किसी जाइज़ मक़सद के लिए मकान किराये पर लिया है तो मालिके मकान की सूदखोरी से किरायेदार का कोई तअल्लुक़ नहीं है, इसलिए उस का मकान बतौरे किराया लेना दुरुस्त है।

प्रश्नः हाउस टैक्स, बेजा बिजली बिल इसी तरह जी. एस.टी. में सूदी रक़म देना कैसा है?

उत्तरः यह वह मदें हैं जिनसे इन्सान खुद फाइदा उठाते हैं, हाउस टैक्स, वाटर टैक्स पानी सप्लाई या सीवर लाइन वगैरा की सुहूलत के बदले में लिया जाता है, इसी तरह जी.एस.टी. हर शै से इस्तिफादा की सूरत में लगता है, इसलिए उनमें सूदी रक़म देना अपने मुफाद में इस्तेमाल करना है जो जाइज़ नहीं है?

❖❖❖

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारुल उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	21–अदनान पल्ली निकट, हिरा पब्लिक स्कूल, रिंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हुसैन प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

मुवह्हिद

एकोहि पूज्य को जो भी पूजे मुवह्हिद वह कहलाता है
जो उस का साझी ठहराए मुश्रिक वह कहलाता है
मुवह्हिद के सिर खड्ग धरो तुम गैर की पूजा करे नहीं
चांदी सोना पांव पे रख दो गैर की पूजा करे नहीं
एक पूज्य जो सब का है उस को अल्लाह कहते हैं
गॉड कहो या ईश्वर तुम उसे हम अल्लाह कहते हैं
एक उसी की पूजा करना कहलाता तौह़ीद है
उसी से भय और उसी से आशा कहलाता तौह़ीद है
अन्तिम नबी मुहम्मद द्वारा मिली हमें यह शिक्षा है
रहमत रब की उन पर है, उन पर रब की कृपा है
मुवह्हिद से रब राज़ी होगा जन्नत उस का घर होगा
मुश्रिक से रब नहीं है राज़ी दोज़ख़ उस का घर होगा
माने या न माने कोई हर इक को अधिकार है
जन्नत या दोज़ख़ का देना रब ही को अधिकार है

हमारी सफलता नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण में निहित है

—मौलाना सय्यिद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी

हमारे देश की जो दशा इस समय हो गई है वह किसी से छुपी नहीं है, जो देश एक लम्बे समय से शान्ति तथा शरण का देश था वह अब उपद्रव, अव्यवस्था तथा पारस्परिक घृणा का स्थल बन चुका है और अब इस देश की यह दशा हो चुकी है कि कोई व्यक्ति इस बात की गारण्टी नहीं दे सकता कि कोई अगर घर से बाहर निकले तो सुरक्षित वापस आ सकता है। जंगल में जंगली हिंसकों के बीच तो आदमी सुरक्षित रह सकता है, परन्तु शहरों में, आबादियों में उसके प्राण तथा उसका माल सुरक्षित रहे इसकी कोई गारण्टी नहीं।

इन परिस्थितियों में हमारा क्या स्वभाव होना चाहिए और इन जटिल समस्याओं से भरे काल से किस प्रकार उबरना चाहिए, यह बहुत ही ध्यान देने तथा चिन्तन करने की बात है। भावनाओं से अलग हो कर तथा मस्तिष्क से सामयिक उत्तेजना निकाल कर इन कठिन समस्याओं का समाधान अतिआवश्यक है।

कोई भी निर्णय लेने से पहले हम को संसार के दूसरे देशों की परिस्थितियों का गहराई से निरीक्षण करना चाहिए कि उन देशों के मुसलमान किन हालात से दोचार हैं। (किन परिस्थितियों में ग्रस्त हैं) उनको सामने रखना चाहिए। कौमों के जीवन में एक साधारण पग भी असाधारण प्रभाव रखता है तथा उस के दूरगामी और ऐतिहासिक प्रभाव होते हैं वह क़ौम कदापि उन्नति नहीं कर सकती जो बुद्धि से काम न ले, इस सिलसिले में हमारे लिए फिर हमारे पूर्वजों का उज्जवल उदाहरण है जिन्होंने

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

इससे भी अधिक कठिन परिस्थितियों में जीवन बिताया है तथा आपत्तियों और अंधेरियों में खुदाई दीप बन कर न केवल स्वयं के लिए अपितु दूसरों के लिए प्रकाशवान स्तम्भ सिद्ध हुए।

इस बात को भली–भांति समझ लेना चाहिए कि इन हालात में सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी हमारी है, हम इस परिस्थिति को बदलें, अपने जीवन चरित्र को बदलें तथा उसको इस्लाम के ढांचे में ढाल कर सर्वथा प्रेम बन जायें तथा इस्लाम का संदेश हर व्यक्ति तक पहुंचायें और यह सिद्ध करें कि इस्लाम ही एक ऐसी विषहर औषधि है जो हर प्रकार के विष का अन्त कर सकता है और इसी की छाया में मानवता जीवित रह सकती है। समस्त संसार के लिए सर्वथा दयालुता वाले नबी की पवित्र जीवनी का आदर्श हमारे सामने है।

अगर हम इस आदर्श को अपने सामने रख कर अपना जीवन नहीं बितायेंगे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुकरण नहीं करेंगे तो चाहे जितने बड़े प्रदर्शन करें, बन्द मनायें, जुलूस निकालें, हम को सफलता न मिलेगी, इसलिए कि मुसलमान इस्लाम की ज़ंजीर से बंधी हुई कौम है जिसका सिरा (किनारा) सृष्टि के नायक समस्त संसार के लिए दया वाले अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के शुभ हाथों में है। जो इस शुभ ज़ंजीर से जुड़ा रहेगा वह सफल होगा और जो इस ज़ंजीर से अलग होगा और कोई नया मार्ग अपनायेगा वह तिरस्कृत तथा विनष्ट (रुस्वा व बर्बाद) होगा। अल्लाह तआला हम सब को सीधे मार्ग पर चलने का सामर्थ्य दे।

आमीन!

❖❖❖

को उनके क़त्ल से बरी मानते हैं। बेशक हज़रत मुआविया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हू के बीच लड़ाई हुई, यह लड़ाई भ्रांतियों के कारण हुई इस लड़ाई में हज़रत अली रज़ि0 हक़ पर थे और हज़रत मुआविया रज़ि0 इजतिहादी ग़लती पर थे लेकिन हज़रत हसन रज़ि0 से सन्धि हो गई तो वह बरहक़ ख़लीफा हो गये। उनको बुरा कहना, बड़ा गुनाह है। हज़रत अली रज़ि0 के क़ातिल जहन्नमी हैं, हज़रत हसन व हुसैन रज़ि0 जन्नत के जवानों के सरदार हैं हम तमाम अहले बैत से महब्बत रखते हैं वह हमारे सरदार और पेश्वा हैं अहले बैत में हम सर्वप्रथम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़वाज (पत्नियों) को मानते हैं फिर घर के और लोग जैसे हज़रत अ़ली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत ह़सन, हज़रत हुसैन, हज़रते उमामा आदि रज़ियाल्लाहु अन्हुम हैं।

प्रिय पाठको! जब से मैं नदवे में आया हूं दो दर्जन से अधिक लोग मेरे सामने जा चुके हैं, उनमें बाज़ की याद बहुत सताती है विशेष कर हज़रत मौलाना अली मियां रह0, हज़रत मौलाना मुईनुल्लाह नदवी, हज़रत मौलाना मुहम्मद अलहसनी, हज़रत मौलाना मुहम्मद सानी अलहसनी, मौलाना अ़ब्दुल्लाह हसनी, हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्हाक़ संडीलवी, हज़रत मौलाना मुहिब्बुल्लाह लारी और हज़रत मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह0 आदि की, अल्लाह तआला इन सब की मग़फिरत फरमा कर उनके दरजात बुलन्द करे, आमीन। अन्त में दुआ करता हूं, ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले अल्लाह, दुन्या व आख़िरत में काम आने वाले अल्लाह मुझे इस्लाम पर मौत दे और अच्छे लोगों से मिला दे। आमीन।

❖❖❖

परीक्षा की तैयारी

—शमीम इक़बाल खाँ

शब्द परीक्षा अपने में बड़ा विचित्र शब्द है, जो परे—इच्छा अर्थात् इच्छा से परे हो, वही परीक्षा होती है, इसके बावजूद मनुष्य के जीवन से यह उसी प्रकार जुड़ी होती है जिस प्रकार शरीर से उसके अंग जुड़े होते हैं, इधर बच्चे ने जन्म लिया उधर उसकी परीक्षा शुरु हो गई, यदि वह पैदा होते ही रो देता है तो उसे उत्तीर्ण मान लिया जाता है और यदि कोशिशों के बावजूद भी बच्चा नहीं रोता तो डॉक्टर उसे फ़ेल कर देते हैं, कहते हैं ऐसे बच्चे मन्द—बुद्धि के होते हैं (भगवान जाने), जब बच्चा घर में रहता है तो सुकून से रहता है और जैसे ही वह स्कूल में दाख़िल किया जाता है, उसका परीक्षामयी जीवन प्रारम्भ हो जाता है, कभी विद्यालयों में प्रवेश लेने के सम्बन्ध में परीक्षा तो कभी नई कक्षा में जाने हेतु परीक्षा, शैक्षिक परीक्षाओं की समाप्ति के पश्चात् व्यवसाय की खोज में बेचारा मनुष्य नाना—प्रकार की परीक्षायें देता रहता है और जब वह व्यवसाय में आ जाता है तो अलग प्रकार की परीक्षायें उसे घेर लेती हैं कभी उसके चातुर्य की परीक्षा, ईमानदारी की परीक्षा तो कभी बेईमानी की परीक्षा और इन्हीं सब के मध्य पदोन्नति की परीक्षा।

मनुष्य तो मनुष्य, देवी देवता भी परीक्षा से नहीं बचते हैं, वे भी एक दूसरे की शक्ति की तथा अपने भक्तों की परीक्षा लेते रहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अन्तिम स्वांसों तक किसी न किसी प्रकार की परीक्षा मनुष्य देता ही रहता है, कभी कुदरत बेशमुार दौलत देती है सिर्फ यह देखने के लिए कि वह उसे किस प्रकार से खर्च करता है, कभी दौलत छीन कर यह देखती है कि बन्दा साबित कदम है अथवा नहीं। धन के अभाव में धर्म के विपरीत काम तो नहीं करने लगा है। इसी प्रकार की बेशुमार परीक्षाओं से मनुष्य जूझता रहता है परन्तु इनसे वह भयभीत नहीं होता, और जब परीक्षायें मनुष्य द्वारा ली जाती हैं, चाहे वह कक्षा पास करने की हो चाहे नौकरी प्राप्त करने की हो या पदोन्नति के लिए दी जाने वाली परीक्षा हो तो वह भयभीत हो जाता है, बहरहाल बिना परीक्षा दिये किसी भी प्रकार की कामयाबी नहीं मिल सकती।

लोग परीक्षा की तैयारी भी करते हैं और परीक्षा के नाम पर घबराते भी हैं, जैसे—जैसे परीक्षा के दिन करीब आते जाते हैं, घबराहट बढ़ती जाती है। अधिकांश की परेशानी प्रश्न—पत्र प्राप्त होने और पहला उत्तर लिखना आरम्भ करने पर ही समाप्त हो जाती है, कई लोग अन्त तक सामान्य नहीं हो पाते हैं, हज़ार में एक—आध ऐसे भी देखे गये हैं जो अस्वाभाविक हरकत कर जाते हैं।

अभी हाल ही में पदोन्नति से सम्बन्धित लिखित परीक्षा, एक स्टेडियम में आयोजित हुई थी, इस परीक्षा में मैं भी पर्यवेक्षक था, एक वरिष्ट अधिकारी, किसी शक के आधार पर एक परीक्षार्थी के पास पहुंचे और अपनी उंगली के इशारे से उसे खड़े होने को कहा, वह खड़ा तो हो गया लेकिन दुबारा उस जगह पर बैठने के लायक नहीं रह गया क्योंकि उसकी पैन्ट और बैठने की जगह दोनों गीली हो चुकी थीं। यहां पर यह नहीं कहा जा सकता कि यह भय, परीक्षा का था अथवा अधिकारी का।

परीक्षा के सिद्धान्तः–

प्रत्येक स्तर की परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित रहता है, इन्हीं पाठ्यक्रम का गहन अध्ययन परीक्षा की अस्वाभाविक परेशानी से बचाता है साथ ही साथ परीक्षा से सम्बन्धित कुछ सिद्धान्त भी होते हैं जो प्रत्येक प्रकार की परीक्षा के लिए सामान्य होते हैं। प्रत्येक प्रश्न–पत्र एक निर्धारित समय में हल करना होता है। अतः परीक्षा समय का उपयोग बड़ी होशियारी से करना चाहिए, परीक्षा सम्बन्धी निर्देश तथा प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए ताकि प्रश्नों को बार–बार पढ़ने में व्यर्थ समय नष्ट न हो और प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर तलाशने तथा उनकी उपयुक्तता पर विचार करने हेतु पर्याप्त समय प्राप्त हो सके।

सभी परीक्षाओं का समय निर्धारित रहता है अतः आवश्यक होता है प्रश्नों की संख्या से निर्धारित समय को भाग दे कर प्रत्येक प्रश्न के लिए समय ज्ञात कर लिया जाये। मान लीजिये तीन घन्टे (अर्थात 60X3=180 मिनट) में 10 प्रश्न करते हैं तो प्रत्येक प्रश्न के लिए 18 मिनट निर्धारित करना पड़ेगा। अब यदि प्रत्येक प्रश्न को हल करने में इससे अधिक समय लगता है तो निश्चित है पूरे प्रश्न हल नही किये जा सकते, उपयुक्त होगा कि यह निश्चित कर लिया जाये कि प्रश्नों को कितनी गति से हल किया जाये कि समयाभाव न होने पाये और प्रश्न पूरे हल हो जायें, इसलिए आवश्यक है कि प्रश्न पत्र प्राप्त होते ही उसे ध्यानपूर्वक पढ़ा जाये और उनसे सम्बन्धित उत्तर पर मन में विचार किया जाये।

इस बात पर भी बराबर ध्यान रखने की आवश्यकता रहती है कि कितने प्रश्नों के उत्तर दे दिये गये हैं और अन्य बचे प्रश्नों के लिए अभी कितना समय शेष है। प्रश्नों के आधार पर समय का बटवारा इस प्रकार किया जाना चाहिए कि अन्त में कुछ समय बच जाये ताकि दिये गये उत्तरों को दोहराया जा सके और यदि कोई प्रश्न हल करने से (पूरा या अधूरा) रह गया है तो उसे पूरा कर लिया जाये।

परीक्षा देने का कार्य तीव्र गति से होना चाहिए और यह गति अन्त तक बनी रहनी चाहिए, गति के साथ ही साथ शुद्धता का भी ध्यान रखना चाहिए, प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व मस्तिष्क में उत्तर का पूरा खाका ख़ीच लेना चाहिए। जिस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो रहा हो और अनुमान के आधार पर ही उत्तर देना है तो ऐसे प्रश्नों का प्रयास बाद में ही किया जाना चाहिए। जिन प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट हैं उन्हें अधिक से अधिक बिन्दुओं पर व्याख्या करते हुए कम से कम समय में पूरा करने का प्रयास करना चाहिए ताकि उन प्रश्नों के उत्तर के लिए समय मिल सके जिनके उत्तर अनुमान के आधार पर अंकित किये जाने हैं।

यदि परीक्षा निबन्धात्क है तो सबसे पहले आसान प्रश्न, हल किये जाने चाहिए और यदि परीक्षा वस्तुनिष्ठ (Objective) प्रकार की है तो प्रश्नों का उत्तर क्रमानुसार ही देना चाहिए।

निर्धारित समय से पूर्व परीक्षा कक्ष न छोड़ना चाहिए और बचे हुए समय में किये गये प्रश्नों को दोहरा लेना चाहिए, हो सकता है कोई महत्वपूर्ण बात पहले छूट गई हो और अब याद आ रही हो, यदि उत्तर में किसी प्रकार की त्रुटि दिख रही है, तो उसे संशोधित कर देना चाहिए।

निर्देश एवं प्रश्नः–

प्रश्न–पत्र और उत्तर पुस्तिकाओं पर छपे निर्देशों को ध्यानपूर्वक और समझ कर पढ़ना चाहिए, इन निर्देशों को पढ़ कर ही पीरक्षा प्रारम्भ करनी चाहिए ताकि यह समझा जा सके कि परीक्षा लेने वाला परिक्षार्थियों से क्या अपेक्षा करता है। परीक्षार्थी का ज्ञान स्तर क्या है और अपने ज्ञान को किस प्रकार से स्पष्ट कर सकता है।

परीक्षा सम्बन्धी सामान्य निर्देश

1. समय निर्धारणः–

प्रत्येक प्रश्न–पत्र को निर्धारित समय में ही पूरा करना होता है अतः प्रश्न–पत्र का समय निर्धारित कर दिया जाता है। यहां पर गति (Writing Speed) का बहुत महत्व रहता है।

2. सहायक सामग्रीः–

परीक्षा में उपयोग में आने वाली सामग्रियां जैसे कलम, पेन्सिल, रबर, रुमाल, तथा घड़ी आदि साथ में ले जाना चाहिए, वे सामग्री अवश्य होनी चाहिए जिनका वर्णन निर्देशों में किया गया हो।

3. उत्तर का क्रमः–

यदि इस प्रकार के निर्देश हैं कि उत्तरों को किसी निश्चित क्रम में अंकित किया जाना है तो उत्तर का क्रम अपनी सुविधा के अनुसार निर्धारित कर सकते हैं, सबसे पहले उसी प्रश्न को चुनें जो ठीक प्रकार से तैयार हों।

4. निर्धारित प्रश्नः–

प्रश्नों के सम्बन्ध में दो प्रकार के विकल्प हो

सकते हैं– या तो सभी प्रश्न करने अनिवार्य होते हैं या उत्तर दिये जाने हेतु प्रश्नों की संख्या अनिवार्य कर दी जाती है। ऐसी दशा में सभी प्रश्नों के उत्तर अंकित करने की भूल न करनी चाहिये।

5. उत्तर की शर्तें:-

कभी–कभी निर्देशों में उत्तर का आकार प्रकार भी निश्चित कर दिया जाता है जैसे गणित के प्रश्नों में स्टेपवार सवालों को हल किया जाये अथवा मात्र उत्तर अंकित कर दिये जायें। कभी–कभी किसी लेख के लिए अधिकतम शब्दों की संख्या निर्धारित कर दी जाती है। कभी इस प्रकार के निर्देश भी होते हैं कि सही उत्तर के सम्मुख कट्टम (☒) अथवा सही (☑) का चिन्ह बनायें। कभी–कभी ग़लत वाक्यों को सही करके लिखने के भी निर्देश होते हैं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं के सम्बन्ध में कभी–कभी इस प्रकार के भी निर्देश होते हैं कि किसी भी प्रश्न का उत्तर ग़लत हो जाने पर निर्देशों में बताई गयी विधि द्वारा चिन्हित करके दूसरा उत्तर चुना जा सकता है।

6. प्राप्तांकों का आंकलन:-

उचित होगा कि इस बात का अनुमान लगा लिया जाये कि इस प्रश्न पत्र में प्रश्नवार कितने अंक प्राप्त हो सकते हैं इससे समय विभाजन में सहायता मिलेगी। जिन प्रश्नों से अधिक अंक प्राप्त होने की आशा है, उन पर अधिक समय दिया जा सकता है।

निर्देश–जो प्रश्न पत्र में अंकित हों या अलग से निर्देश जारी किये गये हों, बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं, प्रश्न पत्र प्राप्त होने पर इन निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ा जाये और उनहीं के अनुसार कार्यवाही की जाये। यदि निर्देश में गलत उत्तर चुनने के लिए कहा गया तो सही उत्तर चुनने की भूल न करनी चाहिए। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है।

उदाहरण:-

यदि निर्देश इस प्रकार है–

निम्न प्रश्नों में तीन सही उत्तर तथा एक गलत उत्तर दिये जा रहे हैं, कृपया गलत उत्तर को टिक करें–

प्रश्न–1

एक मशहूर फिल्मी संगीत कार–

क)– जावेद

ख)– जयदेव

ग)– नौशाद

घ)– नैय्यर

अब यदि किसी ने निर्देश नहीं पढ़े तो मशहूर संगीतकार नौशद का नाम चुन लेगा जबकि सही जवाब होगा <u>जावेद</u> जो संगीत कार नहीं हैं, जबकि अन्य तीनों फिल्मी संगीतकार हैं, इसलिए आवश्यक है कि उत्तर अंकित करते समय निर्देशों को ध्यान में रखा जाये अन्यथा प्रश्न के आधार पर गलत उत्तर ही लिखा जायेगा।

शेष पृष्ठ...39 पर

हज़रत अली रज़ि0 के बाज़ औसाफ़

—हज़रत मौलाना मुहम्मद अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0 —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

एक बार हज़रत मुआविया रज़ि0 ने अपने अहदे खिलाफत में ज़िरार असदी से जो हज़रत अली रज़ि के अस्हाब में से थे दरख़्वास्त की कि ऐ ज़िरार, अली के कुछ औसाफ बयान करो, ज़िरार रह0 ने पहले तो कुछ उज़्र किया उसके बाद कहा कि अमीरुल मोमिनीन सुनियेः—

अल्लाह की कसम अली मुर्तज़ा बड़े ताक़तवर थे, फैसले की बात कहते थे, और इन्साफ़ के साथ हुक्म देते थे, इल्म उनके अतराफ व जवानिब से बहता था और हिकमत उनके गिर्द से टपकती थी, दुन्या और उसकी ताज़गी से मुतवह्हिश होते थे और रात की तन्हाइयों और वहशतों से उन्स हासिल करते थे, रोते बहुत थे और फिक्र में ज़ियादा रहते थे, लिबास उनको वही पसन्द था जो कम कीमत हो, और खाना वही मरगूब था, जो अदना दर्जे का हो, हमारे दरमियान में बिल्कुल मुसावियाना ज़िन्दगी बसर करते थे और जब हम कुछ पूछते तो जवाब देते थे और बावजूद यह कि हम उनके मुक़र्रब थे मगर उनकी हैबत के सबब से उनसे बात करने की जुरअत न होती थी, वह हमेशा अहले दीन की ताज़ीम करते थे और मसाकीन को अपने पास बुलाते थे, कभी कोई ताक़तवर अपनी ताक़त की वजह से उनसे नाजाइज़ फाइदा उठाने की उम्मीद न कर सकता था और कोई कमज़ोर उनके इन्साफ से मायूस नहीं होता था। खुदा की क़सम मैंने उनको बाज़ औक़ात देखा कि जब रात खत्म होने को होती थी तो अपनी दाढ़ी पकड़ कर इस तरह बेकरार होते थे जैसे कोई मारगज़ीदा (सांप काटा हुआ) बे चैन होता है और बहुत दर्दनाक आवाज़ में रोते थे और फरमाते ऐ दुन्या मेरे सिवा किसी और को फरेब दे तू मेरे सामने क्यों आती है मुझे क्यों शौक़ दिलाती है। तू मुझ से दूर हो मैंने तो तुझ को तीन तलाकें बाइना दे दी हैं। जिनमें रुजूअ़ नहीं हो सकता, तेरी उम्र कम है और तेरी क़द्र व मन्ज़िलत बहुत हक़ीर है आह! जादे राह कम है और सफर लम्बा है, रास्ता वहशतनाक।

यह सुन कर हज़रत मुआविया रज़ि0 रोने लगे और कहने लगे अल्लाह की रहमत नाज़िल हो अबुल हसन पर, अल्लाह की क़सम वह ऐसे ही थे, इसके बाद हज़रत मुआविया रज़ि0 ने ज़िरार से पूछा तुम को अली रज़ि0 की शहादत से

कैसा रंज हुआ? ज़िरार रह0 ने कहा कि जैसे किसी माँ का एक ही फरज़न्द हो और वह उसकी गोद में ज़ब्ह कर दिया जाए।

नोटः इस वाकिये से मालूम हुआ कि हज़रत मुआविया और हज़रत हसन रज़ि0 में सुलह के बाद हज़रत अली रज़ि0 के अस्हाब भी हज़रत मुआविया रज़ि0 से तअल्लुकात रखते थे और ज़िरार रह0 ने हज़रत मुआविया रज़ि0 को अमीरुल मोमिनीन कहा। अल–बिदाया वन्निहाया जिल्द 8 पेज 129 पर है कि किसी ने हज़रत मुआविया रज़ि0 से पूछा कि हज़रत अली रज़ि0 के बारे में क्या कहते हो तो हज़रत मुआविया रज़ि0 ने जवाब दिया ''वल्लाहि इन्नी ल–अअ़लमु अन्नहू खैरुम्मिन्नी व अफ़्जलु'' (अल्लाह की कसम मैं यकीनी तौर पर जानता हूं कि वह मुझ से बहुत बेहतर और अफ़्ज़ल हैं) हज़रत मुआविया रज़ि0 हज़रत अली को अपना दुश्मन नहीं मुहतरम बुजुर्ग मानते थे।

(सम्पादक)

आपके जुहद और जफाकशी और तंगीये मईशत के अ़जीब अजीब हालात हैं जिनको देख कर रोना आता है और दुन्या से दिल सर्द हो जाता है।

जेहन आपका निहायत तेज़ था, फैसला निहायत उम्दा करते थे, हज़रत उमर अक्सर फरमाया करते थे कि हमारी जमाअत में क़ाज़ी बनने की सलाहीयत अली रज़ि0 में सबसे ज़ियादा है। आप रज़ि0 के निहायत अजीब व ग़रीब फैसले, रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और शैखैन रज़ि0 के ज़माने के मन्कूल हैं और एक बड़ा ज़खीरा ''इज़ा–लतुल–खिफा'' में भी है।

आप से करामात व खवारिक आदात का भी जुहूर हुआ है, मआरिफ़े तौहीद के बयान में भी आप रज़ि0 मुम्ताज़ मरतबा रखते थे, हज़रत शैख वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह0 फरमाते थे कि सहा–बए–किराम रज़ि0 के तब्के में उन मआरिफ का बयान सबसे पहले आप रज़ि0 ही ने किया, लेकिन आप रज़ि0 ने जो कुछ बयान फरमाया वह सुन्नते अंबिया के मुताबिक है, बाद में जाहिल सूफियों ने उन बातों को कहीं से कहीं पहुंचा दिया, तसव्वुफ में आप रज़ि0 का पाया बहुत बुलन्द है। यूं तो तज़्कि––ए–बातिन तमाम सहा–बए–किराम रज़ि0 को हासिल था, रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफत कुर्आन मज़ीद में व–युजक्कीहिम इरशाद हुई मगर फिर अपनी अपनी इस्तेदाद के मवाफिक़ बाहम फर्के मरातिब था, हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 इस सिफत में ऐसी फौकीयत रखते थे कि हज़राते शैखैन रज़ि0 के बाद उन का दरजा करार दिया जाता है।

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 के बाज़ कलिमात तय्यिबातः–

1. फरमाते थे कि ''बन्दे को चाहिए कि सिवा अपने रब के किसी से उम्मीद

न रखे और अपने गुनाहों के सिवा किसी चीज़ का खौफ़ न करे''।

2. फरमाते थे कि ''जो किसी बात को न जानता हो उसको सीखने में शर्म न करनी चाहिये, और जब किसी से ऐसा मसअला पूछा जाये जिसका उसे इल्म न हो तो उसको बे तकल्लुफ कह देना चाहिए कि अल्लाहु अअ़लमु''।

3. फरमाते थे कि ''मुबारक हो उस बन्दे को जो गुमनाम हो, वह लोगों को जानता हो मगर लोग उसको न जानते हों और अल्लाह की रज़ामन्दी उसको हासिल हो, ऐसे ही लोग हिदायत के चिराग हैं उनकी बरकत से तारीक़ फित्ने दूर होते हैं अल्लाह उनको अपनी रहमत में दाखिल करता है, यह लोग अपनी हालत का इज़हार करने वाले और किसी की बदगोई करने वाले नहीं होते और न बे मुरुवत व रियाकार होते हैं।

4. एक रोज़ आप कबरिस्तान में बैठे थे किसी ने कहा ऐ अबुल हसन रज़ि0 आप यहां क्यों बैठे हैं तो फरमाया कि ''मैं इन लोगों को बहुत अच्छा हम नशीन पाता हूं यह किसी की बदगोई करने वाले नहीं होते और आख़िरत की याद दिलाते हैं''।

5. फरमाते थे कि ''लोग सो रहे हैं जब मरेंगे उस वक़्त बेदार होंगे''।

6. फरमाते थे कि ''अगर आलमे गैब के पर्दे हटा दिये जायें तो मेरे यक़ीन में ज़ियादती न होगी''।

7. फरमाते थे कि ''जिस ने अपने आप को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया।'' (अजीब सूफियाना कलिमा है)।

8. फरमाते थे कि ''हर इन्सान अपनी ज़बान के नीचे छिपा हुआ है''।

9. फरमाते थे कि ''जिस की ज़बान शीरीं होगी उसके भाई बहुत होंगे''।

10. फरमाते थे कि ''उस शख्स को न देखो जिस का कलाम है बल्कि खुद कलाम को देखो''।

11. फरमाते थे कि ''एहसान ज़बान को कतअ़ कर देता है''।

12. फरमाते थे कि ''जब दुश्मन पर तुम को काबू हासिल हो तो उस काबू पाने का शुक्रिया यह है कि उस का कसूर मुआफ कर दो''।

13. फरमाते थे कि ''जो शख्स किसी बात को दिल में छिपाता है वह उसकी ज़बान की जुंबिश से और उसकी सूरत से जाहिर हो जाया करती है''।

14. फरमाते थे कि '' इल्म अदना को आला कर देता है और जेह्ल आला को अदना बना देता है, इल्म माल से बेहतर है क्यों कि इल्म तुम्हारी हिफाज़त करेगा और माल की हिफाज़त तुम को करना पड़ेगी''।

15. फरमाते थे कि ''ईमान की अलामत यह है कि जहां सच बोलने से नुक्सान का अन्देशा हो वहां भी सच बोले''।

16. फरमाते थे कि ''एहसान कर के आज़ाद को भी गुलाम बनाया जा सकता है।''

17. फरमाते थे कि ''जब तक़्दीर का मुआमला आ जाता है तो तदबीर राइगां हो जाती है''।

18. फरमाते थे कि ''बखील जल्द फक़ीर हो जाता है, दुन्या में फक़ीरों की सी ज़िन्दगी बसर करता है और आखिरत में उसको मालदारों की तरह हिसाब देना पड़ेगा''।

19. फरमाते थे कि ''अहमक़ हमेशा मुहताज रहता है और अक़्लमन्द हमेशा ग़नी रहता है और लालची हमेशा ज़िल्लत में बंधा हुआ रहता है''।

20. फरमाते थे कि ''तमअ़ (लालच) की चकाचोन्ध में अक़्ल गिर जाती है''।

21. आखिरी वसीयत में फरमाया कि ''ऐ लोगो! अल्लाह की तौहीद पर काइम रहना, किसी को ख़ुदा का शरीक़ न बनाना और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल करना अगर यह दोनों काम तुम ने कर दिये तो हर बुराई तुम से दूर रहेगी।''

''तौहीद और सुन्नत दीन के दो सुतून हैं और दो मशअले ताबाँ (प्रकाशित दीप) राहे हिदायत की हैं।''

❖❖❖

परीक्षा की तैयारी.....

शंका का समाधानः-

यदि किसी प्रकार की शंका पैदा हो रही है तो उसका समाधान अवश्य करना चाहिए, परन्तु शंका का समाधान परीक्षक से तभी किया जा सकता है जब निर्देशों में ऐसा करने के लिए अधिकृत किया गया हो वरना परीक्षक अथवा पर्यवेक्षक से किसी प्रकार का प्रश्न करके शर्मिन्दा होना पड़ेगा।

किसी भी प्रश्न का प्रत्येक शब्द बड़ा महत्व रखता है इसलिए प्रत्येक शब्दों के अर्थों को भलीभांति समझ कर ही उत्तर देना चाहिए। यदि मीटरिक टन को मी.ट. लिखा गया और परीक्षार्थी ने इसे जल्दी में मीटर पढ़ लिया और इसी आधार पर उत्तर निकाल दिया तो हो गया सवाल गलत। शब्द ''नहीं'' भी बहुत धोखेवाज़ होता है अक्सर यह पढ़ने में छूट जाता है, अतः प्रश्न को बहुत होश्यारी से पढ़ने की आवश्यकता रहती है।

एक प्रश्न हैः-

हुमायूं अकबर के बाप का क्या था?

यदि प्रश्न को ध्यान से पढ़ कर उत्तर न दिया जाये तो गलत उत्तर ही दिया जायेगा। सभी जानते हैं कि हुमायूं अकबर का पिता था, अतः बिना सोचे समझे उत्तर में लोग कह देते हैं बाप था या बेटा था और भी कुछ उत्तर में कह सकते हैं, जबकि सही उत्तर है हुमायूं अकबर के बाप का नाम था।

❖❖❖

लंबी टांगों वाला पक्षी शुतुरमुर्ग़

शुतुरमुर्ग़ विश्व का सबसे बड़ा जीवित पक्षी है। इसकी अधिकतम लंबाई 2.3 मीटर और भार 155 किलो ग्राम तक पाया जाता है। शुतुरमुर्ग़ अफ़्रीका के मैदानों और रेगिस्तानी इलाक़ों में पाये जाते हैं। शुतुरमुर्ग़ से पहले न्यूजीलैंड के मायो पक्षी 3 मीटर लंबे होते थे। लेकिन दुख की बात है कि अब उनका अस्तित्व प्रायः समाप्त हो गया है। यह एकमात्र ऐसा पक्षी है जिसके हर पांव में दो खुर होते हैं।

नर शुतुरमुर्ग़ बेहद ख़ूबसूरत होता है। पांव, गर्दन और सिर को छोड़ कर इसके पूरे शरीर पर घने काले पंख होते हैं। इसकी आंख पांच सेंटीमीटर तक लंबी होती है, जिसकी सहायता से यह काफ़ी अच्छी तरह से दूर–दूर तक देख सकता है। नर शुतुरमुर्ग़ की आवाज़ भी अलग ही होती है। जब यह बोलता है तो ऐसा लगता है कि मानों कोई शेर दहाड़ के साथ साथ फुफकार भी रहा है।

हालांकि शुतुरमुर्ग़ अन्य पक्षियों की तरह उड़ नहीं सकता, लेकिन यह बहुत तेज़ भागता है। एक छलांग में 4.5 मीटर की दूरी तय करने वाला यह पक्षी 65 किलो मीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से दौड़ सकता है। अपनी तेज़ रफ़्तारी और तेज़ नज़र की बदौलत यह पक्षी शिकारियों से बचने में भी सफल हो जाता है।

डर जाने या शिकारी के आ जाने पर यह अपना सिर रेत में घुसा लेता है, इसके बारे में प्रचलित यह कहावत सरासर ग़लत है। अगर भागते–भागते यह बहुत थक जाता है तो अपना बचाव करने के लिए अपनी मज़बूत टांगों की सहायता लेता है। इसका खुर 18 सेंटी मीटर लंबा होता है जो एक हथियार की तरह इस्तेमाल होता है।

आमतौर पर शुतुरमुर्ग़ पेड़–पौधों को खाता है लेकिन मिल जाने पर यह छिपकलियों और कछुओं को भी खाता रहता है। मादा शुतुरमुर्ग़ एक बार में 10 अंडे देती हैं। ये अंडे नर द्वारा रेत में बनाएं घोंसलों में रखे जाते हैं। रात में नर ही अंडे को सेता है। पांच से छह सप्ताह में अंडे से शिशु निकल आते हैं। एक महीने का शिशु एक वयस्क शुतुरमुर्ग़ की रफ़्तार से दौड़ सकता है।

(कान्ति पत्रिका जून 2018 से ग्रहीत)

❖❖❖

Nadwatul Ulama
P.O. Box No. 93, Tagore Marg,
Lucknow - 226007 (India)

ندوة العلماء
ص.ب./٩٣، تيغورمارغ،
لكناؤ-٢٢٦٠٠٧ يوبى (الهند)

Date ________ التاريخ ________

09/09/2018 ٢٨/ذى الحجه ١٤٣٩ھ

باسمہ تعالیٰ

अपील बराए तामीर जदीद हास्टल

अल्लाह तआला का शुक्र है कि दारूल उलूम नदवतुल उलमा हजरत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी की संरक्षता में अपनी इल्मी व दीनी खिदमत में लगा हुआ है, दारूल उलूम में इल्मे दीन के तालिब इल्मों की अधिकता के कारण रिहाइश (निवास स्थान) की बड़ी समस्या हो गई, जिसकी वजह से तालिब इल्मों के दाखिले सीमित करने पड़ते हैं, और नये तालिब इल्मों की एक बड़ी संख्या मायूस होकर वापस हो जाती है। इस सूरतेहाल को देख कर नदवतुल उलमा की प्रबंधक कमेटी ने नये छात्रावास के निर्माण का निर्णय लिया है, जिसका संगे बुन्याद हज़रत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम के दस्ते मुबारक से रखा जा चुका है, और अल्लाह की मदद के भरोसे पर निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है।

इस नये छात्रावास में जो तीन मन्ज़िला होगा, 36 कमरे और 2 हाल होंगे, ताकि तालिब इल्मों की रिहाइश (निवास) के साथ दूसरी शिक्षा संबन्धित ज़रूरतें पूरी हो सकें और वह संतुष्टि होकर शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इस निर्माण कार्य पर 3,61,74,600 (तीन करोड़, एक्सठ लाख, चौहत्तर हज़ार, छः सौ) रूपये, और एक कमरे पर लगभग साढ़े चार लाख रूपये के खर्च का अन्दाज़ा है, जो इन्शाअल्लाह अहले खैर के तआवुन (सहयोग) से पूरा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर अवश्य ध्यान देंगे और नदवतुल उलमा के कार्यकर्ताओं का हाथ बटाएंगे।

हमें अल्लाह तआला पर भरोसा है कि उसकी मदद से यह अहम काम पूर्ति को पहुंचेगा।

मौलाना तकीयुद्दीन नदवी	प्रो० अतहर हुसैन	मौ० सईदुररहमान आज़मी नदवी
(मोतमद तअलीम, नदवतुल उलमा)	(मोतमद माल, नदवतुल उलमा)	(मोहतमिम दारूलउलूम, नदवतुल उलमा)

चेक/ड्राफ्ट पर सिर्फ यह लिखें।

NADWATUL ULAMA
A/C NO. 10863759733 (IFSC CODE - SBIN0000125)
(State Bank of India Main Branch, Lucknow.)

और इस पते पर भेजें।

NIZAMAT OFFICE, NADWATUL ULAMA,
P.O. BOX NO. 93, TAGORE MARG,
LUCKNOW - 226007 (U.P.)

Phone: +91-522-2741316, Guest House: 2740141, Fax: 2741023
e-mail: nadwa@sancharnet.in, website: www.nadwatululama.org

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये

इस्लाम की बुन्याद पाँच बातों पर है।

اسلام کی بنیاد پانچ باتوں پر ہے۔

1. गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई और मअ़बूद नहीं है। और गवाही देना कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

ا۔ گواہی دینا کہ اللہ کے سوا کوئی اور معبود نہیں ہے، اور گواہی دینا کہ محمدؐ اللہ کے رسول ہیں۔

2. रोज़ाना पाँच वक़्तों की नमाज़े अदा करना वह औक़ात यह हैं— फ़ज्र, जुह्र, अस्र, मग़रिब और इशा।

۲۔ روزانہ پانچ وقتوں کی نمازیں ادا کرنا۔ وہ اوقات یہ ہیں: فجر، ظہر، عصر، مغرب اور عشاء۔

3. मालदार को हर साल अपने माल की ज़कात अदा करना।

۳۔ مال دار کو ہر سال اپنے مال کی زکوٰۃ ادا کرنا۔

4. रमज़ान के महीने में पूरा महीना रोज़े रखना।

۴۔ رمضان کے مہینہ میں پورا مہینہ روزے رکھنا۔

5. मक्का मुकर्रमा तक आने जाने पर क़ुदरत हो तो ज़िन्दगी में एक बार हज करना।

۵۔ مکہ مکرمہ تک آنے جانے پر قدرت ہو تو زندگی میں ایک بار حج کرنا۔

यह पाँच बातें इस्लाम की बुन्याद कहलाती हैं लेकिन इस्लाम नाम है हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुकम्मल इताअत का। यह बात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल मानने से साबित होती है।

یہ پانچ باتیں اسلام کی بنیاد کہلاتی ہیں لیکن اسلام نام ہے حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی مکمل اطاعت کا۔ یہ بات حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کو رسول ماننے سے ثابت ہوتی ہے۔